A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 04 जनवरी, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 124, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

कोहरा और जीवन...

फोटो: ऋतुराज बुड़ावनवाला

सुप्रभात

का करूँ जल भी रास न आए
खोज रही है जल
जलमय अखियाँ
पास ना पाए।
जब भी कोई नेता आए
मनवा मोरा काँपे
का बतलाऊँ
का समझाऊँ
नैन के ये धारे
है मतवारे
हाल हमारे
छुपे न छुपाए
का का सुनाऊँ
कैसे उजड़ी है बगिया।
भोर भई और साँझ ढली रे
सूरज भी डूबे जाए
ये जग सारा
देखे तमाशा
दसियो रील बनाए
मैं घबराऊँ
डर-डर जाऊँ
कोई ना प्यास बुझाए
का के बुलाऊँ
कहूँ बदले ये दुनिया।

- राहुल उपाध्याय

छत्तीसगढ़ में एनकाउंटर 14 नक्सली मार गिराए

नक्सली देवा ने 20 नक्सलियों के साथ किया सरेंडर

बीजापुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में शनिवार सुबह दो अलग-अलग जगहों पर मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने 14 नक्सलियों को मार गिराया है। सुकमा के किस्टाराम इलाके में 12 और बीजापुर में 2 नक्सली मारे गए हैं। सभी के शव और हथियार बरामद कर लिए गए हैं। इलाके में सर्च ऑपरेशन जारी है और दोनों ओर से रुक-रुककर फायरिंग हो रही है। इस बीच छत्तीसगढ़ का मोस्ट वांटेड नक्सली स्पेशल जोनल कमेटी मेंबर देवा बारसे ने हैदराबाद में सरेंडर कर दिया है। देवा के साथ 20 नक्सलियों ने भी हथियार डाल दिए हैं। हैदराबाद में दोपहर 3 बजे पुलिस प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी देगी। देवा अपने साथियों के साथ तेलंगाना के मुलुगु पहुंचा था, जहां से पुलिस उसे हैदराबाद लेकर पहुंची थी। सुकमा के किस्टाराम इलाके में नक्सलियों की मौजूदगी के इनपुट पर डीआरजी की टीम को ऑपरेशन के लिए रवाना किया गया था। इस दौरान शनिवार सुबह करीब 8 बजे नक्सलियों ने फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में फोर्स ने 12 नक्सलियों को ढेर कर दिया। सभी के शव और हथियार बरामद कर लिए गए हैं। सर्चिंग जारी है। इधर, बीजापुर में माओवादियों की मौजूदगी की इनपुट मिलने के बाद सुरक्षाबलों ने अभियान शुरू किया। डीआरजी (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड) की टीम नक्सल विरोधी ऑपरेशन पर निकली थी।

सुकमा में 12 और बीजापुर में 2 नक्सली मारे गए

केकेआर से बांग्लादेशी क्रिकेटर मुस्तफिजुर बाहर

● बीसीसीआई के निर्देश के बाद शाहरुख की टीम ने निकाला

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने बांग्लादेशी क्रिकेटर मुस्तफिजुर रहमान को टीम से बाहर कर दिया है। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रही हिंसा के बीच उन्हें टीम से हटाने की मांग उठ रही थी। इसके बाद बीसीसीआई ने शाहरुख खान की आईपीएल टीम केकेआर को मुस्तफिजुर रहमान को हटाने का निर्देश दिया था, जिसके बाद यह फैसला लिया गया।

मुख्यमंत्री ने कृषि वर्ष-2026 में होने वाली गतिविधियों के संबंध में ली बैठक

कृषि वर्ष-2026 में समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश के लक्ष्य को करें साकार : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वर्ष-2026 को प्रदेश में कृषि वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। प्रदेश में विविध जलवायु जोन, पर्याप्त सिंचाई सुविधा, बेहतर रोड नेटवर्क उपलब्ध है। इसका लाभ लेकर किसानों की आय में वृद्धि और कृषि क्षेत्र में रोजगार सृजन के उद्देश्य आधारित गतिविधियां संचालित कर प्रदेश में 'समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश' के लक्ष्य को साकार किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह विचार आगामी कृषि वर्ष अंतर्गत कृषि और इससे जुड़े सहायक विषयों से संबंधित विभागों द्वारा तैयार की गई कार्य योजना की समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में समीक्षा के दौरान व्यक्त किए।

किसानों की आय में वृद्धि और रोजगार सृजन को प्रमुखता से लिया जाए- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि वर्ष-2026 में आरंभ की जा रही सभी गतिविधियां तीन साल का लक्ष्य निर्धारित कर संचालित की जाएं। किसानों की आय में वृद्धि और रोजगार सृजन के लिए कृषि यंत्रीकरण, कृषकों के क्षमता विकास के लिए प्रशिक्षण और भ्रमण कार्यक्रम, खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना, उद्यानिकी विस्तार, एफपीओ निर्माण आधारित गतिविधियों को प्रमुखता दी जाए। इसके साथ ही सस्ती ब्याज दरों पर ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए माइक्रो इरीगेशन, बेहतर बाजार नेटवर्क, किसानों को उनके उत्पाद का वाजिब मूल्य दिलवाने, पशुपालन तथा मछली पालन जैसी गतिविधियों के लिए कृषकों को प्रेरित करने जैसे प्रयास किए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जलवायु के अनुकूल कृषि प्रबंधन, सस्टेनेबल एग्रीकल्चर, श्रीअन्न उत्पादन के प्रोत्साहन और जैव विविधता तथा परम्परागत कृषि ज्ञान के संरक्षण और प्राकृतिक और जैविक खेती के लिए विशेष प्रयास करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि क्षेत्र में अनुसंधान, नवाचार, डिजिटल व्यवस्था सुनिश्चित कर उनकी राष्ट्रीय और वैश्विक उपस्थिति सुनिश्चित की जाए।

किसानों को कृषि में उन्नत राज्यों और देशों की यात्रा करायें

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि तथा संबद्ध क्षेत्रों में अन्य राज्यों में हो रहे सफल नवाचारों की जानकारी से किसानों को रू-ब-रू कराया जाए। इसके साथ ही किसानों को कृषि में उन्नत राज्यों और इजराइल तथा ब्राजील जैसे कृषि के क्षेत्र में नवाचार करने वाले देशों की यात्रा कराये। समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए किसान कल्याण, सहकारिता, पशुपालन एवं डेयरी, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, राजस्व, उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण, ऊर्जा, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा, मछुआ कल्याण और मत्स्य विकास तथा सिंचाई विभाग परस्पर समन्वय से कार्य करें।

प्रदेश के सभी जिलों में फूलों की खेती को करें प्रोत्साहित

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल में होने वाले गुलाब महोत्सव को पुष्प महोत्सव के रूप में आयोजित किया जाए। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों में उत्पादित होने वाले अन्य फूलों को भी शामिल किया जाए तथा सभी जिलों में फूलों की खेती को प्रोत्साहित किया जाए। बैठक में बताया गया कि वर्ष-2028 का 'इंटरनेशनल रोज़ कॉम्पीटिशन' भोपाल में होना प्रस्तावित है। यह भी बताया गया कि सिंहस्थः 2028 को देखते हुए उज्जैन जिले के 100 एकड़ क्षेत्र में फूलों की खेती को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में पराली निष्पादन के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि एफपीओ को दुग्ध उत्पादन गतिविधियों से भी जोड़ा जाए। बैठक में सहकारिता से कृषि क्षेत्र में आरंभ स्टार्ट अप को प्रोत्साहित करने की भी आवश्यकता बताई गई।

125 साल बाद बुद्ध के अवशेष भारत लाए गए

मोदी बोले-उनके लिए ये एंटीक पीस थे हमारे लिए सब कुछ

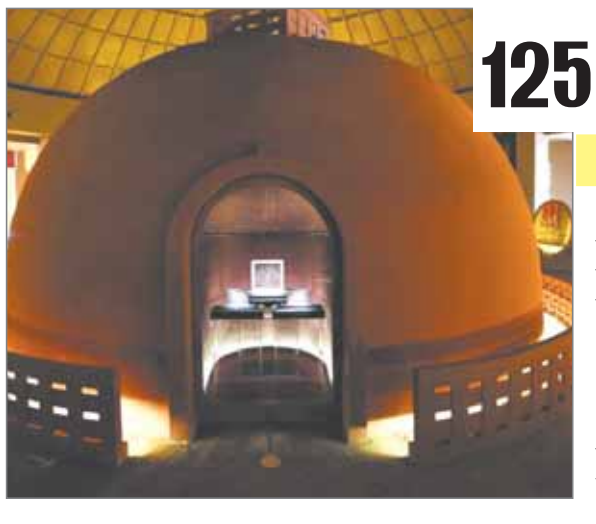

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने भगवान बुद्ध से जुड़े अवशेषों की भारत वापसी पर कहा कि इन अवशेषों को अपने बीच पाकर हम धन्य है। 125 साल के इंतजार के बाद भारत की विरासत लौटी है। अवशेषों का भारत से बाहर जाना फिर वापस आना एक बड़ा सबक है। गुलामी के काल में इन्हें भारत से छीना गया था। जो लोग इसे लेकर गए थे उनके ये केवल एंटीक थे इसलिए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय बाजार में नीलाम करने की भी कोशिश की। भारत ने तय किया कि हम इनकी नीलामी नहीं होने देंगे। हम गोदरेज समूह का आभार व्यक्त करते हैं उनके सहयोग से ये मुमकिन हो सका कि ये अवशेष बुद्ध की भूमि पर वापस आए। दरअसल साल 1898 में उत्तर प्रदेश के पिपरहवा (कपिलवस्तु क्षेत्र) में खुदाई के दौरान भगवान बुद्ध के अवशेष मिले थे। यह खुदाई ब्रिटिश काल में हुई थी। खुदाई कराने वाले व्यक्ति डब्ल्यू. सी. पेपे, उस समय ब्रिटिश शासन में एक इंजीनियर थे। उस वक्त इन अवशेषों को भारत से बाहर भेज दिया गया था।

भगवान बुद्ध सबके हैं, सबको जोड़ते हैं

भगवान बुद्ध सबके हैं, बुद्ध सबको जोड़ते हैं। मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूं, उनका मेरे जीवन में गहरा स्थान रहा है। जब मैं सरकार के दायित्वों से दूर था तब भी बौद्ध तीर्थस्थलों का दौरा करता था। नेपाल के लुंबिनी में माया देवी मंदिर में जाना अद्भुत अनुभव था। जापान और चीन में भी मैंने भगवान बुद्ध को महसूस किया। मंगोलिया में लोगों की आंखों में बुद्ध से जुड़ाव देखा। मैं जहां गया मेरा प्रयास रहा कि बुद्ध की एक विरासत का प्रतीक लेकर लौटूं। भगवान बुद्ध की ये साझा विरासत प्रमाण है कि भारत डिप्लोमेसी, राजनीति से ही नहीं जुड़ता बल्कि आस्था और अध्यात्म से भी जुड़ता है। भारत उनकी परंपरा का जीवंत वाहक है। पिपरहवा अवशेष भगवान बुद्ध से जुड़ी हुई पवित्र और पुरातात्विक चीजें हैं। ये अवशेष उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले में स्थित पिपरहवा नामक स्थान पर खुदाई के दौरान मिले थे। मान्यता है कि इनमें भगवान बुद्ध की अस्थियां (धातु अवशेष) और उनसे जुड़ी प्राचीन वस्तुएं शामिल हैं, जिन्हें उनके महापरिनिर्वाण के बाद अलग-अलग स्थानों पर रखा गया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 04 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

वंदे भारत और शताब्दी के यात्रियों की बढ़ेगी सुविधा

- अब स्वच्छ-पर्यावरण अनुकूल बायोडिग्रेडेबल थाली में मिलेगा खाना

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रेलवे एक बड़ा बदलाव करने जा रहा है। आईआरसीटीसी ने वंदे भारत, बेंगलुरु राजधानी और शताब्दी के लिए एक नई पहल शुरू की है। इन ट्रेनों में अब स्वच्छ और पर्यावरण अनुकूल बायोडिग्रेडेबल थाली का इस्तेमाल किया जाएगा। वंदे भारत, शताब्दी और बेंगलुरु राजधानी ट्रेन में अब लोग प्लास्टिक प्लेट की जगह बायोडिग्रेडेबल थाली में खाना खाएंगे। इससे हर महीने 50,000 से ज्यादा थालियों में 300 किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक की बचत की होगी। आईआरसीटीसी लगातार ट्रेन में प्लास्टिक मुक्त परिसर बनाने पर ध्यान दे रही है।

मैं इन क्रूर लोगों से हार गया तुम अपना ख्याल रखना

- सुसाइट नोट लिख हरियाणा में एक और पुलिस वाले ने दी जान

सिरसा (एजेंसी)। हरियाणा की सिरसा जिला जेल में तैनात एक जेल वार्डर ने कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान फतेहाबाद जिले के हिजरावां खुर्द गांव निवासी सुखदेव सिंह के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, सुखदेव पिछले सात वर्षों से सिरसा जेल में वार्डर के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने गुरुवार शाम को जहरीला पदार्थ खा लिया था और इलाज के दौरान देर रात उनकी मौत हो गई। मृतक के पास से दो सुसाइड नोट बरामद हुए हैं, जिनमें उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों पर मानसिक उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए हैं। सुखदेव के बेटे जसपाल की शिकायत पर जेल के एक डीएसपी वरुण गोदारा और लाइन अधिकारी फूल कुमार के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज किया गया है।

बांग्लादेश में घायल हिंदू व्यापारी की मौत

- भीड़ ने किया था हमला, पेट्रोल डालकर जलाया था

ढाका (एजेंसी)। मोहम्मद यूनुस के शासन वाले बांग्लादेश में एक और हिंदू की चरमपंथियों की भीड़ ने जान ले ली। मृतक की पहचान खोकन चंद्र दास के रूप में हुई है। 50 वर्षीय खोकन चंद्र दास दवा की दुकान चलाते थे। 31 दिसम्बर की रात बांग्लादेश के शरियतपुर जिले में एक भीड़ ने उन पर हमला बोल दिया था। बुधवार की रात जब वे घर लौट रहे थे तो उन्हें चाकू मारा गया, पीटा गया और पेट्रोल डालकर आग लगा दी गई। स्थानीय रिपोर्टों के अनुसार, दास ने शुरुआती हमले के बाद पास के तालाब में कूदकर जान बचाई थी। लेकिन बाद में इलाज के दौरान चोटों की वजह से उनकी मौत हो गई। दास को इलाज के लिए ढाका मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में ले जाया गया था।

पहाड़ों पर बर्फबारी से 'कांप' रहा उत्तर भारत

- यूपी-एमपी से लेकर झारखंड-बिहार तक ठंड का कहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। नए साल के आगाज के साथ देश में तापमान तेजी से नीचे गिरने लगा है। कई राज्यों में सर्दियों का सितम देखने को मिल रहा है। राजस्थान में पारा 0 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है, तो वहीं पहाड़ों पर बर्फबारी के कारण मैदानी इलाकों में

- राजस्थान में नए साल पर पहली बार 0 डिग्री तापमान

गलन और ठिठुरन बढ़ने लगी है। भारतीय मौसम विभाग ने कई राज्यों में शीतलहर का अलर्ट जारी किया है। आईएमडी ने जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, बिहार, ओडिशा, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर, नगालैंड, राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में शीतलहर के साथ घना कोहरा छाए रहने की चेतावनी जारी की है। जम्मू कश्मीर में पहाड़ों ने बर्फ की मोटी चादर ओढ़ ली है। मौसम विभाग ने केदारनाथ, बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब समेत कई जिलों में बर्फबारी का अलर्ट जारी किया है। इसका असर निचले इलाकों में देखने को मिल सकता है, जहां ठंड अचानक से बढ़ने की संभावना है। राजधानी दिल्ली में भी कड़ाके की ठंड ने दस्तक दे दी है। दिल्ली में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस के करीब दर्ज किया गया है। मौसम विभाग ने राजधानी समेत आसपास के जिलों में शीतलहर की चेतावनी जारी की है। इस दौरान 10 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने के आसार हैं। राजस्थान के बाड़मेर, बीकानेर, सीकर, हनुमानगढ़ समेत 10 जिलों में कोहरे का अलर्ट जारी हुआ है। वहीं, मध्य प्रदेश में अगले 3 दिन तक घना कोहरा छाए रहने की उम्मीद है। इसके अलावा भोपाल और इंदौर में हल्की बौछार भी देखने को मिल सकती है। मौसम विभाग ने यूपी और बिहार में भी 9 जनवरी तक के लिए शीतलहर और कोहरे की चेतावनी जारी की है। इस बीच धूप न निकलने और आसमान में घना कोहरा छाए रहने की संभावना है। पहाड़ों से आने वाली ठंडी हवाओं क कारण दोनों राज्यों में गलन और ठिठुरन बढ़ सकती है।

लंगूर की आवाज निकालेंगे, हायरिंग के लिए निकाला टेंडर

दिल्ली में बंदरों को भगाने के लिए आम लोगों की भर्ती

विधानसभा के बाहर 8 घंटे की शिफ्ट में करना होगा काम

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा परिसर में बंदरों के बार-बार घुसने और उत्पात मचाने की समस्या से निपटने के लिए विधानसभा प्रशासन ने नई तरकीब निकाली है। बंदरों को भगाने के लिए लंगूर की आवाज की नकल करने वाले लोगों को तैनात करने की योजना बनाई गई है। लोक निर्माण विभाग ने लंगूरों की आवाज निकालने वाले लोगों की हायरिंग के लिए टेंडर भी निकाल दिया है। अधिकारियों के मुताबिक, पहले उनके पास लंगूर की नकल करने वाले लोग थे, लेकिन उनका कांट्रेक्ट खत्म हो गया है। अब प्रशासन वर्किंग डे और शनिवार को प्रशिक्षित कर्मियों को तैनात करने की योजना बना रहा है, जिनमें

से हर कर्मी 8 घंटे की शिफ्ट में काम करेगा। ये कर्मी लंगूर की आवाज की नकल कर बंदरों को भगाएंगे। विशेषज्ञ अपने साथ एक लंगूर भी लाएगा।

लंगूर के पुतलों से डरना बंद कर चुके हैं बंदर

एक अधिकारी ने बताया कि पहले विधानसभा परिसर में लंगूर के पुतले लगाने की भी योजना थी, लेकिन बंदर उनसे डरना बंद कर चुके हैं। बल्कि वे उन पुतलों के ऊपर बैठ जाते हैं। इसलिए बंदरों को भगाने के लिए लोगों की भर्ती की योजना बनाई गई है। यह तरीका प्रभावी और मानवीय माना जाता है, क्योंकि इसमें बंदरों को नुकसान नहीं पहुंचाया जाता। इस दौरान कर्मी पर उचित उपकरण, अनुशासन और सुरक्षा मानदंडों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए भी जिम्मेदार होगी।

इंदौर के बाद गांधीनगर में प्रदूषित पानी का कहर

सात दिन में 67 लोग पड़े बीमार, खुलासे से मचा हड़कंप

अहमदाबाद (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के इंदौर में प्रदूषित पानी से अब तक करीब 15 लोगों की मौत हो चुकी है। इस घटना की गूंज पूर देश में है। इस सब के बीच गुजरात के गांधीनगर में टाइफाइड का कहर सामने आया है। गांधीनगर महानगर पालिका ने इस घटना के सामने आने के बाद पानी की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार अस्पताल में भर्ती ज्यादातर लोगों में आदिवाड़ा विस्तार के साथ सेक्टर 24, 26 और 28 के रहने वाले हैं। पिछले एक हफ्ते में इन क्षेत्रों से करीब 67 लोग बीमार पड़े हैं। इतना ही नही महानगरपालिका की जांच में 10 स्थानों पर लीकेज भी मिला है। इंदौर की घटना के बाद गांधीनगर में प्रदूषित पानी से लोगों के बीमार पड़ने की घटना ने हड़कंप मचा दिया है। महानगर पालिका द्वारा पानी की जांच की जा रही है। गुजरात की

राजधानी में प्रदूषित पानी पीने से लोगों के बीमार होने के खुलासे के बाद उप मुख्यमंत्री हर्ष संघवी एक्शन मोड में आए हैं। शनिवार को उन्होंने गांधीनगर में टाइफाइड के मामलों को लेकर डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर, म्युनिसिपल कमिश्नर और हेल्थ ऑफीसर के साथ दूसरे एडमिनिस्ट्रेटिव अधिकारियों के साथ मीटिंग की। इसके बाद वह हालात का जायजा लेने के लिए गांधीनगर सिविल हॉस्पिटल पहुंचे।

ट्रम्प बोले-मादुरो और उनकी पत्नी अब हमारे कब्जे में हैं

अमेरिका का वेनेजुएला पर हमला, राष्ट्रपति को पकड़ा

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमरीकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने कहा कि वे प्रेस कॉन्फ्रेंस में इस मामले पर पूरी जानकारी देंगे। हालांकि, ट्रम्प के इस दावे पर अब तक वेनेजुएला का कोई रिएक्शन सामने नहीं आया है। अमेरिका ने बीती रात करीब 2 बजे वेनेजुएला के 4 शहरों पर हमले किए। अमेरिकी मीडिया के मुताबिक ट्रम्प ने वेनेजुएला के अंदर सैन्य सुविधाओं और कई खास जगहों पर हमले का आदेश दिया था। अमेरिकी हमले के बाद वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने बयान जारी कर कहा था कि वे इसका जवाब देंगे। उन्होंने देशभर में इमरजेंसी लगाने का ऐलान किया था। उन्होंने कहा कि अमेरिका तख्तापलट करना चाहता है।

वेनेजुएला पर हमले की अमेरिकी सांसदों ने आलोचना की

वेनेजुएला पर हमले के बाद अमेरिका के डेमोक्रेटिक सांसद ने इसकी निंदा की है। एरिजोना से अमेरिकी सीनेटर रुबेन गाल्गो ने एक्स पर लिखा कि यह जंग गैरकानूनी है। गाल्गो यूएस मरीन कोर के पूर्व सैनिक हैं और इराक में तैनात रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह इराक के बाद दूसरी बिना वजह की लड़ाई है। यूटा से रिपब्लिकन सीनेटर माइक ली (यूटा) ने भी अमेरिकी हमले की आलोचना की है।

भागवत बोले-भाजपा को संघ कंट्रोल नहीं करता

आरएसएस को पार्टी के नजरिए से देखना गलत

संघ चीफ बोले-आरएसएस पैरा-मिलिट्री फोर्स नहीं

भोपाल (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने शुक्रवार को कहा कि भाजपा या विश्व हिंदू परिषद के नजरिए से आरएसएस को समझना गलत है। सभी स्वतंत्र रूप से काम करते हैं और संघ किसी (भाजपा) को कंट्रोल नहीं करता। संघ का उद्देश्य सत्ता, टिकट या चुनाव नहीं, बल्कि समाज की गुणवत्ता और चरित्र निर्माण है। भोपाल में आरएसएस के 100 साल पूरे होने पर आयोजित 'प्रमुख जन गोष्ठी' में बोलते हुए भागवत ने कहा कि हम वर्दी पहनते हैं, मार्च निकालते हैं और लाठी का अभ्यास करते हैं। ऐसे में अगर कोई सोचता है कि यह एक पैरा मिलिट्री फोर्स है

तो यह एक गलती होगी। भागवत ने आगे कहा कि हमारे मत-पंथ, संप्रदाय, भाषा और जाति अलग हो सकती है, लेकिन हिंदू पहचान हम सबको जोड़ती है। हमारी संस्कृति एक है, धर्म एक है।

टैरिफ और विदेशी निर्भरता पर स्पष्ट स्टैंड

अमेरिका के टैरिफ जैसे वैश्विक मुद्दों पर भागवत ने कहा कि भारत को स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता देनी चाहिए। यदि किसी विदेशी वस्तु की आवश्यकता पड़े भी, तो वह भारत की शर्तों पर हो। भारत टैरिफ से डरने वाला देश नहीं है, बल्कि आत्मनिर्भर बनने की क्षमता रखता है। जेन-जी और युवाओं को भारतीय संस्कृति और मूल्यों से जोड़ना समय की सबसे बड़ी जरूरत है। चीन का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वहां की पीढ़ी को बचपन से राष्ट्रीय दृष्टि सिखाई जाती है, भारत को भी अपनी पीढ़ी को संस्कार देना होगा।

'जी राम जी' के खिलाफ कांग्रेस का हल्लाबोल

अगले सप्ताह शुरू होगा 45 दिन का 'मनरेगा बचाओ संग्राम'

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने विकसित भारत-जी राम जी एक्ट, 2025 के खिलाफ जोरदार हल्लाबोल की तैयारी कर ली है। कांग्रेस ने शनिवार को कहा कि वह अगले सप्ताह से करीब 45 दिवसीय मनरेगा बचाओ संग्राम की शुरुआत करेगी और इस एक्ट को कोर्ट में चुनौती भी देगी। कांग्रेस के इस अभियान के तहत ग्राम स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक कई कार्यक्रम करने के साथ ही देश के अलग-अलग हिस्सों में चार बड़ी सभाएं आयोजित की जाएंगी। पार्टी का कहना है कि उसके इस संग्राम का मकसद यह है कि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) बहाल हो और नए कानून को वापस लिया जाए। पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने बताया कि पार्टी का यह अभियान 10 जनवरी से शुरू होकर 25 फरवरी तक जारी रहेगा।

दूसरे विपक्षी दलों को जोड़ा जाएगा

जयराम रमेश ने कहा कि इस संग्राम के साथ दूसरे विपक्षी दलों और समाजिक संगठनों को जोड़ा जाएगा। रमेश ने दावा किया कि इस संग्राम का नतीजा वही होगा, जो तीन काले कृषि कानूनों के समय आंदोलन का हुआ था कि सरकार को वो कानून वापस लेने पड़े थे। संसद ने विपक्ष के हंगामे के बीच बीते 18 दिसंबर को विकसित भारत-जी राम जी विधेयक , 2025 को मंजूरी थी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के हस्ताक्षर के बाद अब यह अधिनियम बन चुका है।

सबरीमाला सोना चोरी के आरोपी को लेकर बड़ा दावा

कांग्रेस एमपी के खुलासे से पार्टी में हड़कंप

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद अदूर प्रकाश के एक स्पष्टीकरण से यह बात सामने आई है कि सबरीमाला सोना चोरी के मुख्य आरोपी का पार्टी की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी से

- अदूर प्रकाश ने कहा- सोनिया से उसका अपॉइंटमेंट था

मुलाकात पहले से तय थी और वह सिर्फ उसके साथ उनसे मिलने पहुंचे थे। बता दें कि केरल के पवित्र सबरीमाला मंदिर से सोना चोरी का मामला बहुत बड़े सियासी बवाल की वजह बना हुआ है, जिसकी जांच हाई कोर्ट के आदेश पर एक पूर्व जज की अगुवाई वाली एसआईटी कर रही है। बीजेपी इस मामले से सोनिया गांधी का नाम उछलने के बाद कांग्रेस के इसमें शामिल होने का आरोप लगा रही है और इसकी जांच केंद्रीय एजेंसी से करवाने की मांग कर रही है। केरल के अट्टिंगल से कांग्रेस सांसद और यूडीएफ के संयोजक अदूर प्रकाश ने एएनआई से कहा है, केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजय ने कल खुलासा किया था कि उन्नीकृष्णनन पोट्टी के साथ मैं सोनिया गांधी के आवास पर गया था। उन्नीकृष्णनन पोट्टी मेरे लोकसभा क्षेत्र का है...2019 में मैं संसद सदस्य बना। उस समय उसने मुझसे संपर्क किया था और कहा था कि वह सबरीमाला में अन्नदानम करवा रहा है और यह कि मुझे आना है और कार्यक्रम का उद्घाटन करना है। मैं वहां गया था। कांग्रेस एमपी ने आगे बताया, अन्नदानम के बाद, मुझे पक्के से नहीं पता कि क्या हुआ। मैं सबरीमाला से चला आया....जब मैं दिल्ली में था, वह (उन्नीकृष्णनन पोट्टी) वहां पर आया और मुझे सूचना दी कि उसका सोनिया जी के साथ अपॉइंटमेंट था। उसने सांसद के तौर पर मुझसे अपने साथ चलने को कहा...। उनके मुताबिक क्षेत्र के सांसद के तौर पर किसी व्यक्ति के साथ वहां मेरे जाने में कुछ भी असामान्य नहीं है।

सोनिया से मुलाकात केरल में विवाद

इस बीच शुक्रवार को एसआईटी ने गिरफ्तार मुख्य आरोपी पोट्टी से फिर से पूछताछ की है। वह सबरीमाला मंदिर में पूर्व सहायक पुजारी के सहायक के रूप में काम कर चुका है। बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के सुरेंद्रन ने मांग की है कि इस केस की जांच केंद्रीय एजेंसियों से करवानी चाहिए। उन्होंने इस मामले से कांग्रेस के जुड़े होने का आरोप भी लगाया और सवाल उठा दिया कि इसके प्रमुख आरोपी सोनिया गांधी से मिलने क्यों पहुंचे।

ड्रोन एवं जियोस्पेशियल इकोसिस्टम में एमपी बना अग्रणी राज्य : सीएम

ड्रोन-आधारित भू-स्थानिक इंटेलीजेंस से डिजिटल गवर्नेंस होगा पारदर्शी

सक्षम और फ्यूचर-रेडी, प्रदेश में हुआ देश की राज्य स्तरीय ड्रोन डेटा रिपोजिटरी का शुभारंभ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देते हुए प्रदेश में देश की पहली राज्य-स्तरीय ड्रोन डेटा रिपोज़िटरी (डीडीआर) शुरू की गई है। इससे मध्यप्रदेश भारत के ड्रोन एवं भू-स्थानिक इकोसिस्टम में अग्रणी राज्य बन गया है। यह पहल प्रदेश में गवर्नेंस को पूर्णतः डिजिटल बनाने की राज्य सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह तकनीक शासन की प्रक्रियाओं को सुगम, सुदृढ़ और पारदर्शी बनाती है। विभागों के बीच ड्रोन-आधारित इंटेलिजेंस को संस्थागत रूप देकर प्रदेश एक अधिक कनेक्टेड, पारदर्शी और भविष्य के लिए तैयार प्रशासनिक ढांचे की ओर तेजी से अग्रसर है। डीडीआर का शुभारंभ 'एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव 2.0' के अवसर पर किया गया था। इसे राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022 तथा डीजीसीए के यूएएस नियम 2021 के अनुरूप विकसित किया गया है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत मध्यप्रदेश स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एमपीएसईडीसी) द्वारा विकसित यह रिपोज़िटरी फ्यूचर-रेडी डिजिटल गवर्नेंस की एक सुदृढ़ आधारशिला सिद्ध होगी।

ड्रोन तकनीक का प्रभावी एवं व्यापक उपयोग - मध्यप्रदेश में ड्रोन तकनीक का प्रभावी एवं व्यापक उपयोग किया जा रहा है। प्रदेश में भूमि सर्वेक्षण, कृषि प्रबंधन, सिंचाई परियोजनाओं, खनन पट्टों की निगरानी, आधारभूत संरचना निर्माण, पर्यावरणीय मूल्यांकन, नगरीय नियोजन तथा आपदा प्रबंधन जैसे विविध क्षेत्रों में उच्च-रिज़ॉल्यूशन ड्रोन सर्वेक्षण किए जा रहे हैं।अब तक ड्रोन सर्वेक्षणों से प्राप्त डेटा विभिन्न विभागों में अलग-अलग संकलित होता रहा, जिससे कई स्थानों पर सर्वेक्षणों की पुनरावृत्ति, अपूर्ण डेटा एकत्र होने और कई महत्वपूर्ण इमेजरी व भू-स्थानिक जानकारियों को सुरक्षित रखने की चुनौती सामने आई।

डेटा दोहराव में कमी और दक्षता में वृद्धि- प्रदेश में पहली बार सभी विभागों के ड्रोन सर्वे डेटा को एक ही प्लेटफॉर्म पर समेकित किया है। इसके परिणामस्वरूप ड्रोन सर्वेक्षणों के दोहराव में 30-50 प्रतिशत तक कमी आई है। डेटा पारदर्शिता में वृद्धि, विभागीय सहयोग में सुधार,फील्ड-वेरिफिकेशन में सटीकता और निर्णय लेने की गति में अत्यधिक बढ़ोतरी संभव हुई है। अब विभाग स्थान, परियोजना, मेटाडाटा, विषय या उद्देश्य के आधार पर आसानी से आवश्यक भू- स्थानिक डेटा खोज सकते हैं। डीडीआर की तकनीकी संरचना अत्याधुनिक है। इससे रियल-टाइम मॉनिटरिंग, लिगेसी डेटा की तुलनात्मक समीक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग आधारित भू-स्थानिक विश्लेषण, स्वचालित कैटलॉगिंग, टाइम-लैप्स परियोजना निगरानी, भविष्य-अनुमान मॉडलिंग और मल्टी-डिपार्टमेंट डेटा इंटीग्रेशन सुगम हुआ है। परिणामस्वरूप डेटा अधिग्रहण का समय सप्ताह से घटकर दिनों में आ गया है। योजनाओं का मूल्यांकन अधिक विश्वसनीय और नीति-निर्माण अधिक तथ्य परक, त्वरित और प्रभावी हुआ है।

भूमि विवादों का त्वरित निराकरण संभव

भू-अभिलेख एवं राजस्व विभाग में भूखंड सीमांकन में उच्च सटीकता, किरायेदारी एवं कब्जा सत्यापन, अतिक्रमण की पहचान और भूमि विवादों का त्वरित निराकरण संभव हुआ है। आधारभूत संरचना एवं निर्माण परियोजनाओं-सड़कों, पुलों, नहरों, सोलर पार्कस एवं सार्वजनिक निर्माण कार्यों की टाइम-लैप्स निगरानी होने लगी है और परियोजनाओं की प्रगति का वैज्ञानिक मूल्यांकन आसान हुआ है। नगरीय प्रशासन एवं शहरी नियोजन के क्षेत्र में उच्च-रिज़ॉल्यूशन 3D मॉडल आधारित ज़ोनिंग, जल, सीवर, परिवहन और उपयोगिता सेवाओं की कुशल योजना बनाने में डीडीआर का उपयोग प्रभावी सिद्ध हुआ है। आपदा प्रबंधन जैसे बाढ़, आग, भू-स्खलन के बाद त्वरित नुकसान आकलन और लिगेसी बेसलाइन डेटा के आधार पर राहत और पुनर्वास की रणनीति बनाना आसान हुआ है। कृषि, सिंचाई, वन एवं पर्यावरण विभाग डीडीआर का उपयोग फसल स्थिति विश्लेषण, कीट-प्रभाव पहचान, माइक्रो- सिंचाई आवश्यकताओं का निर्धारण, वन संरक्षण एवं अवैध कटाई की निगरानी और पर्यावरणीय प्रभाव के आकलन में डीडीआर का उपयोग किया जा रहा है।

डीडीआर को राष्ट्रीय मॉडल बनाने की दिशा में कदम

प्रदेश सरकार आगामी समय में इस ड्रोन डेटा रिपोज़िटरी को एक राष्ट्रीय रूप से सुलभ भू-स्थानिक ढांचे में विकसित करेगी।इसके लिए केंद्रीय मंत्रालयों, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय अनुसंधान संस्थानों, GIS विशेषज्ञों, स्टार्ट-अप्स और निजी उद्योग सहयोगियों के साथ समन्वय बढ़ाने की योजना है। राज्य का लक्ष्य है कि डीडीआर अनावश्यक ड्रोन सर्वेक्षण को कम करे, अंतर्राज्यीय आपदा प्रबंधन सहयोग को मजबूत बनाए और उच्च-गुणवत्ता वाले भू-स्थानिक डेटा आधारित नीति-निर्माण को सक्षम करे। ड्रोन डेटा रिपोज़िटरी मध्यप्रदेश की डेटा-आधारित गवर्नेंस यात्रा में एक परिवर्तनकारी कदम है, इसमें नवाचार, पारदर्शिता और भू-स्थानिक इंटेलिजेंस शासन का अभिन्न हिस्सा बन रहे हैं। एकीकृत और इंटरऑपरेबल प्लेटफॉर्म के माध्यम से डेटा डुप्लिकेशन समाप्त होगा।

ड्रोन डेटा रिपोजिटरी : पारस्परिक रूप से सक्षम भू-स्थानिक प्लेटफॉर्म

डीडीआर एक केंद्रीकृत, क्लाउड-आधारित, सुरक्षित और इंटर-ऑपरेबल डिजिटल अवसंरचना है। इससे भू-स्थानिक प्रशासन के भविष्य का आधार तैयार होता है। इसमें उच्च गुणवत्ता वाले ड्रोन डेटा संग्रहित किए जा रहे हैं। इस डेटाबेस में उच्च-रिज़ॉल्यूशन ऑर्थोमोज़ाइक, 3D टेरेन मॉडल, लिडार स्कैन, वीडियो इमेजरी, लिगेसी बेसलाइन डेटा और बहु-विभागीय सर्वेक्षण रिकॉर्ड शामिल किये जाते हैं। हर डेटा फ़ाइल को सटीक लैटिट्यूड-लॉंगीट्यूड मेटाडाटा, सर्चेबल की-वर्ड, मानकीकृत तकनीकी फॉर्मेट और स्वचालित वर्गीकरण के साथ रिपोज़िटरी में संरक्षित किया जाता है। इस डेटा से सभी अधिकारी खोज, तुलना और विश्लेषण कर सकते हैं।

जेपी अस्पताल में मरीज को दी फफूंद लगी दवा

सीएमएचओ से शिकायत, कहा-खा लेता तो कौन होता जिम्मेदार

भोपाल। मध्यप्रदेश के लोगों के मन में कोल्ड्रिफ सिरप कांड अभी उतरा भी नहीं कि भोपाल जिला अस्पताल (जय प्रकाश) में फफूंद लगी दवा का मामला सामने आया है। एक मरीज शुक्रवार शाम की ओपीडी में हड्डी रोग विशेषज्ञ को दिखाने पहुंचा। पैर में फ्रेक्चर की आशंका जताते हुए डॉक्टर ने एक्सरे और दर्द की दवा लिखी। मरीज ने अस्पताल की फार्मेसी से दवा ली, जिसमें फफूंद लगी हुई थी। इसी शिकायत मरीज ने मुख्य स्वास्थ्य एवं चिकित्सा अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. मनीश शर्मा को ईमेल के मध्यम से भी की है। साथ ही दोषियों पर कार्रवाई की मांग की है। मरीज का आरोप है कि यदि वह जल्दबाजी में दवा खा लेता, तो उसकी तबीयत बिगड़ सकती थी और इसके गंभीर परिणाम हो सकते थे। सरकारी अस्पतालों में दवाओं की सप्लाई और उनकी गुणवत्ता की जिम्मेदारी मध्य प्रदेश लोक स्वास्थ्य सेवा निगम लिमिटेड की है। MPPHSCL के जरिये सेंट्रल फार्मेसी से मांग आने पर जिला एवं अन्य अस्पतालों को दवा सप्लाई की जाती है। मरीज सतीष को जो दवा की स्ट्रिप दी गई है, उस पर एक्सपायरी डेट जून 2027 लिखी हुई है। यह दर्द में दी जाने वाली डिक्लोफेनाक 50 एमजी की टैबलेट है। जिसका बैच नंबर ष्ठस्रू25002 है। यह दवा MPPHSCL के द्वारा 27 अक्टूबर 2025 को जेपी अस्पताल को मुहैया कराई गई थी।

ओपीडी में नहीं था सीनियर डॉक्टर

पीड़ित मरीज सतीष सेन के अनुसार, यह घटना शुक्रवार शाम करीब 5 बजे की है। पैर में चोट लगने के बाद वे इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचे थे। वे सबसे पहले हड्डी रोग विभाग (ऑर्थोपेडिक) पहुंचे, लेकिन वहां उस समय कोई सीनियर डॉक्टर मौजूद नहीं था। मरीज का कहना है कि लंबे समय तक इंतजार के बावजूद जब वरिष्ठ चिकित्सक नहीं मिले, तो वहां मौजूद इंटर्न डॉक्टरों ने उनका परीक्षण किया और दर्द की दवा लिख दी।

अस्पताल के मेडिकल स्टोर से ली गई थी दवा

इंटर्न डॉक्टरों द्वारा लिखी गई पर्ची के आधार पर सतीष सेन ने अस्पताल परिसर में स्थित फार्मेसी से दवा ली। मरीज का कहना है कि उस समय न तो दवा की पैकिंग में कोई स्पष्ट चेतावनी दिखी और न ही फार्मेसी कर्मचारी ने दवा की स्थिति को लेकर कोई जानकारी दी। मरीज सतीष सेन के अनुसार, जब वे घर पहुंचे और दवा को ध्यान से देखा, तो उन्हें फफूंद (फंगस) जमी दिखी। मरीज का कहना है कि यदि वह जल्दबाजी में या दर्द के कारण तुरंत दवा खा लेता, तो उसकी सेहत को गंभीर नुकसान हो सकता था। मरीज ने अपनी शिकायत में साफ लिखा है कि यह सिर्फ लापरवाही नहीं, बल्कि मरीज की जान से खिलवाड़ है। सरकारी अस्पतालों से मिलने वाली दवाओं पर गरीब और मध्यम वर्ग के मरीज सबसे ज्यादा भरोसा करते हैं। सतीष सेन ने कहा कि वह खुद सतर्क था, इसलिए दवा देख ली, लेकिन हर मरीज इतना सतर्क नहीं होता।

दवाओं की गुणवत्ता पर पहले भी उठते रहे हैं सवाल

यह पहला मामला नहीं है जब सरकारी अस्पतालों में दवाओं की गुणवत्ता पर सवाल उठे हों। इससे पहले भी कई बार एक्सपायर्ड, संदिग्ध या खराब स्टोरेज वाली दवाओं की शिकायतें सामने आती रही हैं। NHM के पूर्व संचालक डॉ. पंकज शुक्ला के अनुसार, फफूंद लगी दवाएं सेवन करने से संक्रमण, एलर्जी, लिवर और किडनी को नुकसान जैसी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। खासतौर पर दर्द निवारक और एंटीबायोटिक दवाओं में फंगस बेहद खतरनाक हो सकता है। वहीं, मामले में CMHO मनीष शर्मा से बात करने का प्रयास किया गया, लेकिन उन्होंने फोन नहीं उठाया। हालांकि, टेक्स्ट मैसेज के जरिए उन्होंने मीटिंग में होने की जानकारी दी है।

22 बच्चों की मौत और 4500 पन्नों की अधूरी चार्जशीट

परासिया 'कफ सिरप कांड' में पुलिस की ढीली कार्रवाई पर भड़के परिजन

भोपाल। जहरीले कफ सिरप कांड में शुक्रवार को एसआईटी ने परासिया न्यायालय में फाइनल चार्जशीट पेश की। करीब साढ़े चार हजार पन्नों की इस चार्जशीट में अब भी विस्तृत पोस्टमार्ट्म रिपोर्ट, बिसरा की रासायनिक जांच और चिकित्सा विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट शामिल नहीं हो सकी है। इसी को लेकर पीड़ित परिवारों के वकील पुलिस कार्रवाई से असंतुष्ट नजर आए। गौरतलब है कि इस कांड में 22 बच्चों की मौत किडनी फेलियर के कारण हुई थी। मामले की जांच के लिए गठित एसआईटी अब तक 9 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है, लेकिन जांच के दायरे में अब भी कई संदिग्ध चेहरे शामिल बताए जा रहे हैं। पीड़ित परिजनों के अधिवक्ता संजय पटोरिया ने कहा कि इतने बड़े और संवेदनशील मामले में पुलिस की कार्रवाई बेहद धीमी रही है। चार्जशीट में अब भी अहम वैज्ञानिक और चिकित्सकीय साक्ष्य शामिल नहीं हैं, जो न्याय के लिए जरूरी हैं।

281 सेकंड तक हुई नागपुर के डॉक्टर से बात- वहीं एसआईटी प्रमुख का कहना है कुछ जांच रिपोर्ट अभी प्राप्त होना बाकी हैं। उनके आते ही आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल जांच जारी है। जांच में सामने आया है कि अगस्त 2025 के अंतिम सप्ताह से बीमार बच्चे परासिया के आरोपी चिकित्सक डॉ. प्रवीण सोनी के पास पहुंचने लगे थे, जिनमें किडनी से जुड़ी गंभीर समस्याएं पाई गईं। 11 सितंबर 2025 को वेदांश पवार नामक बच्चा नागपुर के डॉ. प्रवीण खापेकर के पास गंभीर किडनी रोग की अवस्था में पहुंचा। परिजनों से चर्चा के बाद डॉ. खापेकर ने आरोपी चिकित्सक डॉ. प्रवीण सोनी से 281 सेकंड तक फोन पर बातचीत की थी।

संदेह के बावजूद जारी रही सिरप की बिक्री

जांच में यह भी सामने आया है कि कफ सिरप में गड़बड़ी की जानकारी होने के बावजूद डॉ. प्रवीण सोनी की पत्नी के मेडिकल स्टोर से कोल्ड्रिफ कफ सिरप की बिक्री जारी रही। इस प्रकरण में जिन बच्चों का पोस्टमार्टम नहीं हो पाया, उनके बिसरा की रासायनिक जांच रिपोर्ट अब तक पुलिस को नहीं मिली है। मृत बच्चों की मौत के कारणों की पुष्टि के लिए गठित चिकित्सा विशेषज्ञ जांच समिति की रिपोर्ट भी लंबित है।

सीपीपी की जगह दिया गया कोल्ड्रिफ सिरप

जांच रिपोर्ट के अनुसार मयंक पिता नीलेश सूर्यवंशी को डॉक्टर द्वारा सीपीपी सिरप लिखी गई थी। लेकिन रसेला मेडिकल स्टोर से सीपीपी की जगह कोल्ड्रिफ कफ सिरप दिया गया। डॉ. ठाकुर की प्रिस्क्रिप्शन पर्ची में दवा का नाम बदला नहीं गया। इसी कोल्ड्रिफ सिरप के सेवन से मयंक की किडनी फेल हुई और उसकी मौत हो गई। हालांकि पुलिस का कहना है कि शेष रिपोर्ट मिलने के बाद चार्जशीट में पूरक दस्तावेज जोड़े जाएंगे और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

भोपाल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सर कार्यवाह एवं अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य मनमोहन वैद्य ने आज अपनी पुस्तक प्रवेश विजयवर्गीय जी वरिष्ठ स्वयंसेवक को 'हम और यह विश्व' भेंट की।

भोपाल में रेलवे ट्रैक के ऊपर से निकलेगा निशातपुरा आरओबी

नए-पुराने शहर को जोड़ेगा, नवंबर तक पूरा होगा, मंत्री सारंग ने किया निरीक्षण

भोपाल। भोपाल में निशातपुरा रेलवे ओवरब्रिज इस साल नवंबर तक बनकर कम्प्लीट हो जाएगा। करीब 100 करोड़ रुपए से बनने वाला आरओबी नए और पुराने शहर को जोड़ेगा। करीब 9 लाख लोगों को फायदा मिल सकेगा। शनिवार को मंत्री विश्वास सारंग ने निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। मंत्री सारंग ने कहा कि यह देश का पहला ऐसा आरओबी होगा, जो एकसाथ 7 रेलवे ट्रैक के ऊपर से गुजरेगा। यह आरओबी भोपाल स्टेशन के प्लेटफार्म-1 से छोला खेड़ापति हनुमान मंदिर तक पहुंचेगा। निर्माण पूरा होने के बाद करीब 9 लाख लोगों को फायदा मिलेगा। पीडब्ल्यूडी, रेलवे, एफसीआई सहित संबंधित विभागों में समन्वय के लिए एक कमेटी बनाई गई है। ताकि, निर्माण कार्य में कोई अड़चन न आए और यह जल्दी बन जाए। मंत्री सारंग ने बताया कि आरओबी के बनने के बाद करोंद, बैरसिया, बैरागढ़, विदिशा से आने वाले लोग आसानी से भोपाल रेलवे स्टेशन आ-जा सकेंगे। पुराने शहर से किसी को भेल इलाके में जाना होगा तो यह आरओबी काफी फायदेमंद रहेगा। अरेरा कॉलोनी, शाहपुरा समेत कई इलाकों से आना-जाना आसान हो जाएगा। भविष्य में यही आरओबी एयरपोर्ट तक आने-जाने के लिए भी उपयोग आ सकेगा। मंत्री सारंग ने शनिवार को निर्माण स्थल पर जाकर निरीक्षण किया और अफसरों से चर्चा की। साथ ही ब्रिज की डिजाइन भी देखी। महापौर मालती राय, वीरेंद्र पाठक समेत कई समर्थक भी मौजूद थे।

भोपाल मेट्रो को नहीं मिल रहे पैसेंजर, टाइमिंग बदली

अब दोपहर 12 बजे एम्स से दौड़ेगी मेट्रो,5 जनवरी से नया शेड्यूल

भोपाल। भोपाल मेट्रो को पैसेंजर नहीं मिल रहे हैं। इस वजह से 14 दिन में ही मेट्रो कॉरपोरेशन ने न सिर्फ टाइमिंग बदल दी, बल्कि ट्रिप भी घटा दी है। अब एम्स स्टेशन से सुबह 9 बजे की बजाय दोपहर 12 बजे मेट्रो शुरू होगी, जबकि यही से शाम 7.30 बजे आखिरी मेट्रो चलेगी। भोपाल मेट्रो का उद्घाटन 20 दिसंबर को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय मंत्री मनोहरलाल खट्टर ने किया था। इसके अगले दिन यानी, 21 दिसंबर से कमर्शियल रन शुरू हो गया। इस दिन से आम लोग मेट्रो में सफर करने लगे। मेट्रो चलते हुए शनिवार को 14 दिन बीत गए, लेकिन शुरुआत में जिस संख्या में पैसेंजर मिल रहे थे, वे एक चौथाई भी नहीं है। पहले दिन 21 दिसंबर को पैसेंजर संख्या सबसे ज्यादा 6568 तक पहुंच गई थी, जबकि अब 1 हजार के आसपास ही यात्री मेट्रो में सवार हो रहे हैं। इस वजह से मेट्रो कॉरपोरेशन ने टाइमिंग और ट्रिप दोनों में बदलाव कर दिया है। मेट्रो अफसरों के अनुसार, यात्रियों की संख्या कम होने की वजह से समय और ट्रिप में बदलाव किया है। अब 3 घंटे देरी से मेट्रो शुरू होगी, जबकि रात 7.55 बजे तक यह चलेगी। शाम 7.30 बजे एम्स से सुभाषनगर के बीच आखिरी मेट्रो दौड़ेगी, जो 25 मिनट में सुभाष नगर स्टेशन पहुंचेंगी। पहले की तरह 75 मिनट के अंतराल में मेट्रो मिलेगी। यानी, एक गाड़ी छुटने के बाद दूसरी गाड़ी सवा घंटे बाद ही मिल सकेगी। पहले दोनों ओर कुल 17 ट्रिप लगाई जा रही थी, जो घटाकर 13 कर दी गई है। एम्स से सुभाषनगर के बीच 7 और सुभाषनगर से एम्स के बीच 6 ट्रिप लगेगी।

13 दिन में 29 हजार पैसेंजर भी नहीं आए

इंदौर में 31 मई-25 को मेट्रो के कमर्शियल रन की शुरुआत की गई थी। यहां पहले ही दिन करीब 26 हजार पैसेंजर मेट्रो में सवार हुए थे। हालांकि, शुरुआती 7 दिन तक इंदौर में मेट्रो में सफर करना फ्री में था, लेकिन भोपाल में ऐसा नहीं किया गया। पहले दिन से ही लोगों को टिकट खरीदना पड़ी। बावजूद पहले दिन कुल 6568 पैसेंजर सवार हुए थे और मेट्रो को टिकट के बदले 2 लाख 5 हजार 350 रुपए मिले थे। इसके बाद पैसेंजर की संख्या घटती गई। 22, 23 ओर 28 दिसंबर को पैसेंजर 2 हजार से ज्यादा थी। वहीं, 25 दिसंबर को क्रिसमस की छुट्टी होने से 4264 लोगों ने मेट्रो में सवार किया था। 30 दिसंबर को सबसे कम 967 पैसेंजर मेट्रो में बैठे थे। वहीं, नए साल के पहले दिन 2023 और दूसरे दिन 1065 यात्रियों ने सफर किया। यात्रियों की कम संख्या की वजह से ही मेट्रो के समय और ट्रिप दोनों में बदलाव कर दिया गया।

कहानी

रविकांत राऊत

अपने मन का घर

जुलाई की शाम थी। शहर की उस पुरानी गली में उमस ऐसे ठहरी थी, जैसे समय पसीना बहा रहा हो। नाली उफन रही थी, बिजली बार-बार आँख मार रही थी और सड़क पर पड़ा नगर निगम का कूड़ेदान अपनी हैसियत भूल चुका था।

कमरे के भीतर सिद्धार्थ छत की ओर देख रहा था। एक मकड़ी धैर्य से जाल बुन रही थी–बिना किसी नक्शे, बिना किसी वास्तुकार के।

सामने अवंतिका खड़ी थी। हाथ में "Royal Greens Residency" का चमचमाता ब्रोशर और चेहरे पर वर्षों से जमा असंतोष लिये हुये।

'बस, अब और नहीं,' उसने ब्रोशर मेज़ पर पटक दिया।

'यह गली, यह बदबू, यह पानी की किल्लत हर दिन की यही मारामारी- अब मुझसे सहन नहीं होता, मुझे भी एक ढंग के मोहल्ले में अच्छा सा घर चाहिए सिद्धार्थ, बालकनी वाला, गार्डन वालाज जहाँ ढंग से साँस ली जा सके।'

सिद्धार्थ ने चश्मा उतारा। उसकी निगाहों में शरलक होम्स-सी शांति थी–वही निगाह जो दिखने वाले से ज़्यादा, छिपे हुए को पढ़ती है।

'अवंतिका,' वह बोला, -'तुम इसे घर की समस्या समझ रही हो ,-मैं इसे एक केस मानता हूँ।'

'मुझे तुम्हारा दर्शन नहीं, समाधान चाहिए,' उसने झुंझलाकर कहा।

'समाधान ही तो है,' सिद्धार्थ मुस्कुराया।

'पिछले हफ्ते हम मेहता जी के नए घर गए थे। तीन करोड़ का विला। तुम्हें क्या दिखा?'

'मार्बल, झूमर, मॉड्यूलर किचन' उसकी आँखों में चमक लौट आई।

'और मैंने,' सिद्धार्थ ने कहा, 'उनकी आँखों में उनकी आय पर भारी पड़ती 15 साल की ईएमआई देखी। डाइनिंग टेबल पर पड़ी बीपी,शुगर और हार्ट की गोलियाँ देखीं। और उस महंगे किचन में खड़ी उनकी पत्नी देखी –जो एक सड़े से कप के टूटने पर नौकरानी पर गंवारों जैसी चिल्ला रही थी।'

वह खिड़की के पास गया। बाहर शोर था–हॉर्न, नाले, बारिश से पहले की बेचैनी।

'शरलक कहता है,'- सिद्धार्थ ने धीमे से आगे कहा,

'जब असंभव को हटा दो, तो जो बचता है वही सच होता है।'

'असंभव यह है कि ईंट-पत्थर आनंद दे सकते हैं।

सच यह है कि उन्होंने मकान बनाया, और खुद को खो दिया।'

अवंतिका ने प्रतिवाद किया, 'तो क्या एक अच्छा घर होना या लक्ज़री होना ग़लत है?'

'नहीं,' सिद्धार्थ ने उसका हाथ थाम लिया।

'लेकिन लक्ज़री (ऐश्वर्य) और (ब्लिस) आनंद एक नहीं हैं। ऐश्वर्य होटल है–चमकदार, ठंडा। आनंद घर है–जहाँ आप थककर सुकून से जैसे चाहें पसर सकें।'

बाहर बादल गरजे। बारिश की पहली बूंद गिरी। नाले की बदबू पर मिट्टी की सोंधी खुशबू भारी पड़ गई।

'दलाई लामा कहते हैं,' -सिद्धार्थ फिर आगे बोला,

'मनुष्य अपनी सामर्थ्य से आगे जा कर बाहरी दुनिया को सजाने में इतना व्यस्त हो जाता है कि उसके भीतर का घर उजड़ जाता है।'

'सोचो,' उसकी आवाज़ गहरी हो गई,'आज मर-मर कर , हम तीस साल सिर्फ़ एक घर के लिए लगा दें। और जब वहाँ पहुँचें– तो शरीर बीमार हो, मन थका हो, और साथ की गर्मी ग़ायब हो।'

'अगर हम सारा जीवन केवल दीवारें खड़ी करने में लगा दें,'

'तो भीतर का मन खंडहर रह जाएगा।'

'मैंने अपने विभाग में सैकड़ों 'खूबसूरत घरों' के मालिक देखे हैं,' 'डान ब्राउन के उपन्यासों के पात्रों की तरह–ऊपर भव्य इमारतें, भीतर खाली तहख़ाने लिये हुये ।'

'वे लोग ऐश्वर्य में रहते हैं,'

'पर आनंद से बेख़बर।'

अवंतिका चुप थी।

ब्रोशर उसके हाथ में अब भारी लग रहा था। उसने गहरी साँस ली।

'शायद'- 'शायद मैं घर नहीं,'-'सुरक्षा चाह रही थी।'

सिद्धार्थ ने धीरे से उसका हाथ थाम लिया- 'और सुरक्षा,' वह बोला, -'ईंटों से नहीं, साथ से बनती है।'

'समस्या घर नहीं है,' सिद्धार्थ बोला, 'समस्या है तुलना ।'

'तेरा ऐसा–तो मेरा वैसा।'

यह जीवन नहीं, एक अंतहीन प्रसारण वाला सोप-ऑपेरा , सास-बहु सीरीयल है।

और इसमें हम थकेले अभिनेता हैं– दर्शक है कम-अक्लों की जमात ।'

'तो क्या करें?' उसने धीरे से पूछा।

'एक महल बनाएँ,' सिद्धार्थ ने कहा, 'लेकिन भीतर।'

'जिसकी नींव संतोष हो।

जिसकी दीवारें संवाद हों।

जिसकी खिड़कियाँ हँसी के लिए खुलती हों।

और जिसकी छत से प्रेम की झूमरें लटकती हो।'

फिर, उसने मुस्कुरा कर पूछा, - 'अगर मैं तुम्हें आज पाँच करोड़ का घर दे दूँ, और बदले में यह शाम, यह चाय, यह बातचीत और अपना गर्माहट भरा साथ छीन लूँ– तो क्या तुम सौदा करोगी?'

अवंतिका ने बाहर बारिश देखी। गली वही थी, हालात वही थे– पर भीतर कुछ खिसक चुका था।

उसने ब्रोशर मोड़कर रख दिया- 'तो आपके इस 'भीतर के महल' का निर्माण कब शुरू होगा, श्रीमान जी?'

'वो तो कब का शुरू हो चुका हैं'- सिद्धार्थ ने चाय का पानी चढ़ा दिया था- देखो अभी हम उसी की बालकनी में तो खड़े हैं और –बारिश देख रहे हैं।

चाय की प्याली से उठती भाप की खुशबू - सिद्धार्थ की बांह अवंतिका की कमर को घेरे में लिये हुये , दोनों के गाल एक दूसरे को छूते हुये। सिद्धार्थ ने कहा - देखो इस पल, यहाँ जो सुकून है –वह किसी पॉश पेंटहाउस में नहीं मिल सकता ।

अवंतिका के चेहरे पर समाधान था और सिद्धार्थ के चेहरे पर भी मुस्कान थी, लेकिन उसके भीतर एक और सिद्धार्थ बैठा था–

जो जानता था कि उसका यह दर्शन आधा सत्य है और आधा मजबूरी, सिद्धार्थ जो खुद भी चाहता है , उसकी पत्नी की ख्वाहिश पूरी हो ।

फिर उसने सोचा 'चलो,' कम से कम आज तो बच गए।÷।

अंदर ही अंदर उसने राहत की साँस ली– ठीक है मैं इसे बड़ा घर नहीं दे पाया, पर आज के लिए बड़ा विचार तो बेच ही दिया।

उसे संतोष था– एक और शाम निकल गई, बिना झगड़े के, एक और नयी ईएमआई की बला आते आते टल गई,

आज फिर एक बार उसने अपनी बेबसी से, अवंतिका को मायूस नहीं होने दिया।

आज एक बार फिर से उसने अपनी पत्नी को अपने दर्शन के बल पर थोड़ा-सा सही बहला तो दिया ही।

चाय खत्म हो रही थी, बारिश गिर रही थी, और सिद्धार्थ मन ही मन मुस्कुरा रहा था– 'छोड़ यारा , घर तो बाद में बन जाएगा,'

'फिलहाल एक कहानी तो बन ही गई।'

एक कविता

ठिठुरते समय में

संदीप राशिनकर

बर्फबारी के
इस सर्दीले दौर में
जहां
जमती जा रही है
बर्फ की परतें
घरों पर / पेड़ पौधों पर
गाड़ियों पर
और तो और

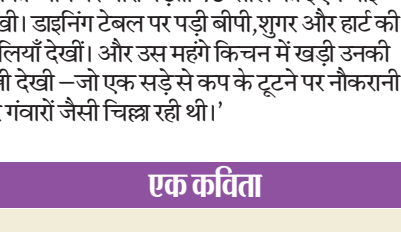

मेरे , तेरे - उसके
आपसी संबंधों पर भी !
ऐसे
सहमते / जमते,
ठिठुरते समय में
मैंने
बचा रखी है
संवेदना के कोने में
थोड़ी सी
रिश्तों की गर्माहट
जो वक्त आने पर
गला सके, तोड़ सके
जमी हुई बर्फ
यहां, वहां
न जाने
कहां - कहां !!

लघुकथा

दोस्त

अविनाश अग्निहोत्री

अच्छा बेटा अब मैं गार्डन में अपने दोस्तों से मिलकर आता हूं।

प्रमोद बाबू ने कुर्सी से उठते हुए अपनी बहु से कहा।

पर पापाजी सोनू कल बता रहा था कि गार्डन में दादाजी के दोस्त कोई व्यक्ति नहीं बल्कि वहां के नन्हे पेड़ पौधे और पशु पक्षी है।

वे रोज पौधों को पानी देते हैं और पक्षियों के दाना पानी की व्यवस्था करते है।

हमने तो आपको कालोनी के लोगों से मेलजोल बढ़ाने को कहा था ताकि आप अकेलापन न महसूस करे और आप.....

बहु ने प्रमोद बाबू को टोकते हुए कहा।इसपर वे बोले,बेटा आजकल लोग सामने वाले की माली हालत देखकर ही उससे दोस्ती करते है।

जबकि दोस्ती तो सदैव निस्वार्थ भाव से की जाती है न।

मनाली के 'गुप्त' स्वर्ग का दीदार

हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पीति क्षेत्र से बहने वाली चंद्रा नदी एक बेहद खूबसूरत नदी। – साभार

लेखिका हर्षा का सम्मान

भोपाल। पंचवटी एक्सटेंशन प्रांगण में नव वर्ष की पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संघ सचिव विजय घारू ने शुभकामनाएं देते हुए युवाओं को उनके सद्व्यवहार एवं नियमितता को सराहा। इस अवसर पर संत शिरोमणि हिरदाराम जी के जीवन काा दर्शन कराती संत हिरदावाणी यू ट्यूब पर अपलोड की गईं। लेखिका - कवयित्री हर्षा कन्हैया मूलचंदानी को शाल श्रीफल से सम्मानित किया गया। महिला मंडल द्वारा गेम्स का संचालन रंजना अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम का नेतृत्व ज्योति घारू ने किया। कार्यक्रम का संचालन आरोही संगवानी ने किया।

किताब दो

कमलेश कुमार दीवान

हर वक्त ये सवाल फिर
उसका जवाब दो
कैसे रहे हैं साल
किस-किसका जवाब दो।

अब रोज की ये बात है
हर वक्त के सवाल
देते रहें जबाब और फिर
सबका हिसाब दो।
अब तो किसी भी बात का
एतबार नहीं है
मांगे हैं चांद तारे कहे
फिर आफताब दो।

थोड़े बहुत से जिंदगी
चलती तो बात थी
ओहदे बड़े हैं फिर कोई
बड़ा खिताब दो।

कैसे कहें क्या क्या
हुआ कहते रहे 'दीवान'
सब ही रहें खुशहाल
कोई ऐसी किताब दो।।

व्यंग्य

शांतिलाल जैन
लेखक व्यंग्यकार हैं।

मनरेगा : उस से इस जिंदगी तक

मनरेगा अब हमारे बीच नहीं रहा। कहते हैं मर्डर हुआ है उसका। निज़ाम ने किया है। निज़ाम के किए मर्डर अपराध की श्रेणी में नहीं आते। क्रिमिनल प्रोसीज़र कोड बनाना भी निज़ाम के अख्तियार में है और मर्डर करना भी। मनरेगा के चाहनेवाले ऐसे में निज़ाम पर मुकदमा भी कायम नहीं कर पाते। बस कुछ दिन छाती पीट रुदन करके अगली खबर पर चले जाते हैं। रियाया बापड़ी मनरेगा पर रुदन करे कि इंडिगो पर, अरावली पर करे कि उन्नाव पर, निज़ाम को फर्क नहीं पड़ता। उसकी अपनी एक चाल होती है। ज्यादातर धकियाता हुआ, बुलडोज़ करता, कभी कभी धीरे से पतली गली से निकल लेता है। कुछ सिरफिरे हैं देश में एफआईआर तो दाखिल कर नहीं पाते, पीआईएल दाखिल कर देते हैं। इंसाफ इजलास में भी मयस्सर नहीं। हाकिम से घुड़की खाकर फिर अपनी खोल में दुबक जाते हैं। जननायक की हुक्म उदूली करने की हिम्मत आला-हाकिम तक में भी नहीं बची।

मनरेगा का मर्डर गोली मारकर एक झटके में नहीं किया गया उसे धीरे-धीरे मारा गया। बज़ट-दर-बज़ट कम होती गई फंडिंग के कारण वो कमज़ोर होता चला गया। उसके फेफड़ों में भ्रष्टाचार का संक्रमण फैलने दिया गया। उसे सामाजिक ऑडिट जैसी जरूरी दवाईयाँ भी नहीं दी गईं। स्टाफ की कमी ने बाज़ दफ़ा उसकी साँस में रुकावट डालने के जतन किए। जरूरत थी उसका बेहतर से बेहतर इलाज़ कराने की। बजाए इसके एक दिन उसे अधिकारिक रूप से मार दिया गया।

जब उसे मारा गया तभी उसकी आत्मा को नए शरीर में प्रवेश करा दिया गया। बहस-मुबाहिसे की बीच नामकरण संस्कार की रस्म अदा की गई। नाम भी इतना लंबा कि मज़दूर इसे बोलते-बोलते ही थक जाए, काम करने की ताकत ही न बचे। विकसित भारत गारंटी रोज़गार, काम, नौकरी, धंधा, पेशा, आजीविका मिशन (ग्रामीण)। नाम में जब पर्यायवाची रखने ही हैं तो दो पर क्यों रुकना। संसद में पेश नवजात की कुंडली बहुतों को आश्चर्य में डाल गई। मंगल से गुरु तक सारे ग्रह बलवान। जानकारों ने बताया कि अपने पूर्व जन्म के अवतार के विपरीत नवागंतुक शिशु आचरण में उद्दंड होगा। गुरू प्रथम भाव का स्वामी होने के कारण वह सिर्फ केंद्र के निज़ाम की बात मानेगा। स्थानीय स्वायत्तता उसे छू तक नहीं पाएगी। बालक महाप्रतापी होगा और संघीय ढाँचे को झटके देता रहेगा। ऊपरी घर में शुक्र मजबूत होने के कारण दिल्ली का निज़ाम ही तय करेगा कि बालक कब, कहाँ, कैसे और क्या काम करेगा। वह स्टेट अंकल्स की बात पर कान तक नहीं धरेगा। उसकी मंथली पॉकेट मनी का चालीस प्रतिशत हिस्सा स्टेटवाले अंकल देंगे। नहीं दे पाए तो वह उस राज्य की ओर पैर करके सोएगा भी नहीं। ग्रामीण गरीब का मंगल कमज़ोर रहेगा जिससे बालक रोजगार की मांग पर ध्यान नहीं दे सकेगा, वोट केलकुलेशन के आधार पर रोज़गार प्रदान करेगा।

पूत के पाँव पालने में ही नज़र आने लगे हैं। उसने पैदा होते ही रोज़गार को 'अधिकार' के झंझट से मुक्त कर दिया है। उसकी गारंटी है धनी मानी बड़े काश्तकारों को फसल कटाई के साठ दिनों में सस्ते खेतिहर मज़दूर उपलब्ध कराने की। जातक लफ्फाज़ी में प्रवीण होगा। वह जानता है अपने पूर्व अवतार में कभी किसी बरस सौ दिन का रोज़गार दे नहीं पाया था मगर अब वादा एक सौ पच्चीस दिन का है। विकसित भारत तक आते आते वह बरस में हज़ार दिन की गारंटी भी दे सकता है। निज़ाम गारंटी की साधारण गारंटी नहीं होती। किसी माई के लाल में दम नहीं कि निज़ाम की गारंटी रिडीम करा सके। निज़ाम के सरोकार खाने के और, दिखाने के और। बालक मीडिया सेवी होगा। वह बड़े बड़े विज्ञापनों में शेखी बघारता दीखेगा, असल सवालों से दूर रहेगा। उसकी कुंडली के किसी भी खाने में न आख़िरी आदमी होगा, न आख़िरी आदमी का गाँव।

आख़िर में तो बस श्रद्धांजलि। भलेमानस थे मनरेगा। तमाम बीमारियों की बावजूद जब तक जीवित रहे, यथासंभव रोज़ी मुहैया कराते रहे। होश संभालते ही वे देशज कामगारों की भलाई में जुट गए थे। उनके जीवनकाल में मजदूरों की कुछ आमदनी बढ़ी, तो कुछ मुफलिसी की मार कम हुई। उन्होंने खेतिहर मजदूर को इतनी ताकत दी कि वह फसल कटाई के दिनों में अपने श्रम का मोल तय कर सके। शायद उनके नसीब में उनका वही हश्र लिखा था जो आठ दशक पहले उनके नाम में समाहित एक महात्मा की दुबली-पतली ज़ईफ़ काया का हुआ था। जिस महात्मा की मृत्यु ने तब करोड़ों को शोक में डाला था, अब उसके नाम की योजना के इंतक़ाल ने बारह करोड़ खेतिहर मजदूरों को तो अवसाद में डाला ही है। बहरहाल, मनरेगा को विनम्र श्रद्धांजलि और नवागंतुक जी-राम-जी को अनंत शुभकामनाएँ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय चित्रकला में रवि वर्मा का स्थान और आलोचना

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

रवि कभी आँगन में कहीं भी बैठकर फूल-पत्तियों का स्केच बनाता तो कभी रौशनी में नहाए वातावरण में भीजता वहाँ के दृश्य को अपने पटल पर उतारने में लगा रहता था। लोगों का पहनावा भी वहाँ के अनुरूप ही था जो धीरे-धीरे रवि वर्मा के चित्रों में आने लगा था। बालक रवि वर्मा शुरू से ही प्रतिभाशाली था। उस रोज भी वो अपने चाचा के साथ लगा हुआ था कि चाचा को अचानक कुछ विशेष कारण से थोड़ी देर के लिए बाहर जाना पड़ा। एकांत पाकर अंतस के प्रबल भावों के बल पर बालक रवि वर्मा जो मात्र 14 वर्ष का था बेखौफ, निडर हो चित्र में रंग भरना शुरू कर दिया साथ ही बचे हुए रेखा कार्यों को भी पूरा कर दिया जो एक आश्चर्य जनक बात थी। वापस आने पर चित्र देखते ही राजा वर्मा आश्चर्य से भाव विभोर हो उठे। उनके मन में बालक रवि वर्मा को लेकर उम्मीदों का एक पहाड़ उभर आया और मन ही मन वो रवि वर्मा को भविष्य का महान चित्रकार मान बैठे जो आगे चलकर शत-प्रतिशत खरा भी सिद्ध हुआ, जिसके लिए उनके चाचा हमेशा ही रवि वर्मा के साथ खड़े रहे। उनके प्रयासों के बल पर ही इनको त्रावनकोर के महाराजा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ प्रतिफल ये हुआ कि दरबारी चित्रकार रामास्वामी द्वारा इन्हें जलरंग की बारीकियाँ समझने का मौका मिला जल्द ही ये जलरंग में दक्षता हासिल करने में भी सफल रहे।

कला के प्रति रवि वर्मा की ललक और तीव्र पकड़ को देखकर रामास्वामी तथा ब्रिटिश शबीह चित्रकार थियोडोर जॉनसन दोनों ने रवि वर्मा को तैल रंग में प्रशिक्षण देनें से साफ मना कर दिया। हाँ जॉनसन की तरफ से बस इतनी अनुमति थी कि पूर्ण हुए चित्र को बालक निहार सकता है बस। उसका कथन था कि चित्र निर्माण प्रक्रिया के समय वो अपने आस-पास किसी को भी नहीं रहने देता, ध्यान भंग की खाल ओढ़कर वो खुद को इस प्रक्रिया से अलग कर लिया था बावजूद इसके अधिकतर लोगों का मानना था कि रवि वर्मा को तैल रंग की शिक्षा थियोडोर जॉनसन से ही मिली। मामला संशयग्रस्त है।

जॉनसन ने खुद को बचाने का यह कदम ईर्ष्या बस उठाया या रवि वर्मा के आगे भविष्य में उसे अपनी जमीन खिसकती नजर आई, कह पाना मुश्किल है पर एक बात तो साफ है कि मुश्किल हालात के बाद ही खुशनुमा प्रभात का आनंद है अतः मुश्किल घड़ी में भी हाथ पैर मारना बंद नहीं करना चाहिए युवा रवि वर्मा ने भी यही किया और मालाबार स्कूल ऑफ पेंटिंग में भी दाखिला के प्रयास में जा लगे यहाँ भी निराशा ही हाथ लगी। अब तक अपने अथक प्रयासों और लगातार निराश होने के चलते मानसिक रूप से कमजोर महसूस करने लगे थे रवि वर्मा पर चित्रकला में नवीन सृजन में निरंतरता बनी रही इस बीच भी इनके चित्र लगातार बनते रहे और अथक प्रयास, एकाग्रचित मन के प्रयासों का फल तथा महाराजा के सहयोग से पाश्चात्य कला चित्रों पर प्राप्त कुछ चित्रकला संबंधित पुस्तकों के चित्रों को देखकर, गहन अध्ययन कर ये चित्रों की बारीकियों को पकड़ पाये और प्रयत्न के बल पर ही खुद एक संस्थान बन बैठे फलतः पाश्चात्य के ही कला के अधिकतर विद्वानों को कहना पड़ा कि लाजवाब गुणों के धनी हैं रवि वर्मा। देखते ही देखते इनके चित्र अंतरर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भी सराहे जाने लगे और स्वर्ण पदक जैसे पुरस्कार हासिल करने में सफल रहे। राजा रवि वर्मा द्वारा स्थानीय शैलियों का भी खूब अध्ययन किया गया। परिचित चेहरों, उनके आसपास रहने वाले लोगों को पटल पर स्थापित कर उनमें दिव्यता भर कर वही रूप देवी देवताओं के हेतु प्रयोग किया गया। उनके अधिकतर चित्रों में सुगंधा थी जिसको लेकर रवि वर्मा के बारे में तरह-तरह की बातें हवा हुई थी और जिसकी वजह से वर्मा जी को कई जगह घेरा भी गया था। चित्र सीता हरण में उन्होंने सीता के रुप में अपने ही पोती की छवि को अंकित किया था।

कलाकार राजा रवि वर्मा की माँ जो स्वयं कथकली-कवयित्री व चित्रकार थीं, मणिप्रवालम्, पार्वती स्वयंवरम् जैसी विख्यात कृति थी जिनकी तथा पिता संस्कृत भाषा एवं आयुर्वेद के विद्वान, का असर था कि अब तक रवि वर्मा के काम का सिलसिला जोर पकड़ चुका था पर भटकन भी कम न थी विषय को लेकर ऊहापोह जैसा वातावरण विद्यमान था। उनका मॉडल उनके आसपास से ही होता था। वह एक ऐसे कलाकार थे जो कैनवास पर ऑयल कलर में काम करने वाले पहले भारतीय

कलाकार बनें।

भारतीय कला जगत में, तैल रंगीय यथार्थता को लाने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। युरोपीय यथार्थवादी शैली को भारतीय रुप में प्रस्तुत कर देना धीरे-धीरे इनके लिए आसान होता गया। इनके चित्रों में शबीह चित्र, सामाजिक संदर्भों से युक्त चित्र और जग जाहिर धार्मिक चित्र प्रमुख थे। राष्ट्रीयता संबन्धी इनके चित्र भी कम नहीं चित्रों को महान बनाने के लिए, चित्रों में जीवंतता लाने के लिए, चित्रों में सजीवता लाने के लिए इन्होंने अनेक शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन किया। वेद-पुराण, उपनिषद, चित्रसूत्र, नाटक, साहित्य आदि के अध्ययन से भविष्य में बनने वाली कृतियों की रूपरेखा तय हो सकी तथा अपने छोटे भाई के साथ विभिन्न स्थानों पर जाकर रहन-सहन, वेष-भूसा का भी उन्होंने बड़े ही बारीकी के साथ अध्ययन किया। सांस्कृतिक परंपरा, वस्त्रों के पहनावे के नये-नये ढंग, चेहरों के बनावट, भाव, आभूषण और अलग-अलग स्थानों के पृष्ठभूमियों, पौराणिक विषयों पर गहनता के साथ काम किया गया। मेहराब, झाँकियां, महलों के रंग, अलंकरण, आदि को अलग-अलग स्थानों पर देख-समझ लेने के बाद उसमें राष्ट्रीयता के भाव को समावेशित करने के बाद कृतियों में उतारे हैं। समाज पर नाटक मंडलियों के प्रभाव का भी गहन अध्ययन करने के बाद इन्होंने अपने चित्रों का रूप, का रंग, अपने चित्रों के पीछे का बैकग्राउंड, अपने चित्रों के भाव-भंगिमा, लय-छंद ये सारे गुण ये अपने अध्ययन से ही सम्भव कर पाए और यही सारा अध्ययन जो इनका अपना था, इनकी अपनी विशेषता बन कर उभरी जिसके फलस्वरूप इनके मस्तिष्क पर कैरेक्टर को लेकर शास्त्रीयता परक भावनाएं पनप सकीं। कहा जाता है कि यात्रा के बाद इनके चित्रों में बैग्राउण्ड के भी दर्शन होने लगे थे हालांकि बैग्राउण्ड बनाने का कार्य इनके भाई का होता था। पूरा परिवार ही कलाकार था ऐसा लगता है।

संस्कार और संस्कृतियों के विशाल पटल पर चमकता भारत जहाँ भरतमुनि, पतंजलि, आर्यभट्ट जैसे लोगों का जन्म हुआ हो, अजंता, एलोरा, खजुराहो, कोणार्क जैसी थाती से भरी पुरी धरा भारत को, लगभग 1000 पृष्ठों के बैश्विक कला पर लिखी जा रही पुस्तक में केवल एक आध पन्ने पर समेट देना क्या भारत के कला के साथ न्याय कहलाएगा? लेकिन यहाँ ऐसा हुआ एक कला समीक्षक द्वारा वैश्विक कला पर पुस्तक लिखते हुए भारतीय कला को महज कुछ शब्दों में समेट दिया गया मतलब कि जहाँ ईर्ष्या हो या जो समझ में ही न आये उस पर बात करने से अच्छा या उस पर और अधिक मेहनत करने से अच्छा उस पर बात ही न करी जाय वाली पद्धति पर किताब 'द आउट लाइन ऑफ आर्ट' तैयार हुई जहाँ भारतीय कला के साथ अन्याय साफ तौर से दिखता है ऐसे समय में कलाकार राजा रवि वर्मा जी के चित्रों पर अच्छे समीक्षा की उम्मीद बेइमानी सी प्रतीत होती है। आम भारतीयों के निगाहों में अपने कला के जरिए रच-बस जाने वाले राजा रवि वर्मा गाहे-बगाहे समीक्षकों के भी अच्छे बुरे दौर से गुजरे हैं।

दृष्टिहीनों की शिक्षा में ब्रेल लिपि की भूमिका

विश्व ब्रेल दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आंखें संक्रमित होने के कारण उनकी आंखों की दृष्टि पूरी तरह चली गई थी लेकिन दृष्टिहीनता के बावजूद उन्होंने न केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन किया बल्कि छात्रवृत्ति पर 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' चले गए। 1821 में फ्रांसीसी सेना के एक कैप्टन चार्ल्स बार्बियर लुई ब्रेल के स्कूल के दौरे पर आए थे, जिन्होंने सेना के लिए एक विशेष क्रिप्टोग्राफी लिपि का विकास किया था, जिसकी मदद से सैनिक रात के अंधेरे में भी संदेशों को पढ़ सकते हैं। चार्ल्स ने स्कूल में बच्चों के साथ 'नाइट राइटिंग' नामक यही तकनीक साझा की, जिसका उपयोग सैनिक दुश्मनों से बचने के लिए किया करते थे। इसके तहत वे उभरे हुए बिन्दुओं में गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान करते थे किन्तु उनका यह कोड बहुत जटिल था। इसीलिए ब्रेल ने इसी आइडिया के आधार पर अपनी लिपि पर कार्य शुरू किया और 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' में अध्ययन के दौरान ही उन्होंने 1824 में अपनी लिपि को तैयार कर लिया, जो काफी सरल थी। इसी लिपि को ब्रेल लिपि के नाम से जाना गया और सरल लिपि की खोज के बाद दुनियाभर में नेत्रहीन या आंशिक रूप से नेत्रहीन लोगों की जिंदगी काफी हद तक आसान हो गई। अपने इसी आविष्कार के कारण लुई ब्रेल दुनियाभर में दृष्टिबाधित लोगों के लिए मसीहा बन गए।

ब्रेल लिपि नेत्र विकारों वाले व्यक्तियों और दृष्टि विकलांग लोगों के लिए पढ़ने और लिखने की स्पर्शनीय प्रणाली है, जिसकी खोज 4 जनवरी 1809 को फ्रांस के कूपवरे में जन्मे लुई ब्रेल ने महज 15 वर्ष की आयु में की थी। संचार के साधन के रूप में ब्रेल लिपि के महत्व के बारे में विश्वभर में जागरूकता फैलाने, दृष्टि-बाधित लोगों को उनके अधिकार प्रदान करने और ब्रेल लिपि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 4 जनवरी को ब्रेल लिपि के आविष्कारक लुई ब्रेल के जन्मदिवस को 'विश्व ब्रेल दिवस' मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के 'विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेन्शन' में ब्रेल लिपि को संचार के एक साधन के रूप में उद्धृत किया गया है। संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक

संगठन 'यूनेस्को' ने वर्ष 1949 में ब्रेल लिपि में एकरूपता लाने के उद्देश्य से समस्याओं पर ध्यान देने वाला एक सर्वेक्षण आगे बढ़ाने की पहल की थी। लुई ब्रेल ने केवल तीन साल की उम्र में ही एक दुर्घटना के कारण अपनी दोनों आंखों की रोशनी खो दी थी। आंखें संक्रमित होने के कारण उनकी आंखों की दृष्टि पूरी तरह चली गई थी लेकिन दृष्टिहीनता के बावजूद उन्होंने न केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन किया बल्कि छात्रवृत्ति पर 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' चले गए। 1821 में फ्रांसीसी सेना के एक कैप्टन चार्ल्स बार्बियर लुई ब्रेल के स्कूल के दौरे पर आए थे, जिन्होंने सेना के लिए एक विशेष क्रिप्टोग्राफी लिपि का विकास किया था, जिसकी मदद से सैनिक रात के अंधेरे में भी संदेशों को पढ़ सकते हैं। चार्ल्स ने स्कूल में बच्चों के साथ 'नाइट राइटिंग' नामक यही तकनीक साझा की, जिसका उपयोग सैनिक दुश्मनों से बचने के लिए किया करते थे। इसके तहत वे उभरे हुए बिन्दुओं में गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान करते थे किन्तु उनका यह कोड बहुत जटिल था। इसीलिए ब्रेल ने इसी आइडिया के आधार पर अपनी लिपि पर कार्य शुरू किया और 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' में अध्ययन के दौरान ही उन्होंने 1824 में अपनी लिपि को तैयार कर लिया, जो काफी सरल थी। इसी लिपि को ब्रेल लिपि के नाम से जाना गया और सरल लिपि की खोज के बाद दुनियाभर में नेत्रहीन या आंशिक रूप से नेत्रहीन लोगों की जिंदगी काफी हद तक आसान हो गई। अपने इसी आविष्कार के कारण लुई ब्रेल दुनियाभर में दृष्टिबाधित लोगों के लिए मसीहा बन गए।

ब्रेल लिपि कोई भाषा नहीं है बल्कि एक तरह का कोड है। यह ऐसी लिपि है, जिसे एक विशेष प्रकार के उभरे कागज पर लिखा जाता है और इसमें उभरे हुए बिन्दुओं की श्रृंखला पर उंगलियां रखकर या उन्हें उंगलियों से छूकर पढ़ा जाता है। ब्रेल लिपि को टाइपराइटर जैसी दिखने वाली एक मशीन 'ब्रेलराइटर' के जरिये लिखा जा सकता है या पेंसिल जैसी नुकीली चीज 'स्टायलस' और ब्रेल स्लेट 'पट्ट' का इस्तेमाल करके कागज पर बिन्दु उकेरकर लिखा जा सकता है। ब्रेल में उभरे हुए बिन्दुओं को 'सेल' के नाम से जाना जाता है। 1 से 6 बिन्दुओं की यह एक व्यवस्था या प्रणाली होती है, जिसमें बिन्दु अक्षर, संख्या और संगीत व गणितीय चिन्हों के संकेतकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ब्रेल लिपि के अंतर्गत उभरे हुए बिन्दुओं से एक कोड बनाया जाता है, जिसमें 6 बिन्दुओं की तीन पंक्तियां होती हैं और इन्हीं में इस पूरे सिस्टम का कोड छिपा होता है। चार्ल्स बार्बियर की शुरुआती कूट लिपि 12 बिन्दुओं पर आधारित थी, जिन्हें 66 की पंक्तियों में रखा जाता था। तब इसमें विराम, संख्या और गणितीय चिन्ह मौजूद नहीं थे। लुई ब्रेल ने इसमें सुधार करते हुए 12 की जगह 6 बिन्दुओं का उपयोग कर 64 अक्षर और चिह्न का आविष्कार किया, जिसमें उन्होंने विराम चिन्ह, संख्या और संगीत के नोटेशन लिखने के लिए भी जरूरी चिह्न उपलब्ध कराए। ब्रेल ने हालांकि 1824 में पहली बार सार्वजनिक रूप से अपने कार्य को प्रस्तुत किया था लेकिन ब्रेल लिपि प्रणाली को 1829 में पहली बार प्रकाशित कराया। उन्होंने एक प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएं दी और अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय ब्रेल लिपि प्रणाली का विस्तार करने में बिताया। हालांकि जीते जी उनके काम को उचित सम्मान नहीं मिला और उनके निधन के 16 वर्ष बाद 1868 में ब्रेल लिपि को प्रामाणिक रूप से मान्यता मिली, जो आज दुनियाभर में मान्य है।

समय के साथ तकनीकी युग में ब्रेल लिपि में कुछ बदलाव होते रहे हैं और अब ब्रेल लिपि कम्प्यूटर तक भी पहुंच गई है। ब्रेल लिपि वाले ऐसे कम्प्यूटर में गोल व उभरे हुए बिन्दु होते हैं और कम्प्यूटरों में यह तकनीक उपलब्ध होने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि अब दृष्टिहीन व्यक्ति भी तकनीकी रूप से मजबूत हो रहे हैं। ब्रेल लिपि में अब बहुत सारी पुस्तकें निकलती हैं, यहां तक कि स्कूली बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तकों के अलावा रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथ भी छपते हैं। भारत सरकार द्वारा 4 जनवरी 2009 को लुई ब्रेल के जन्म को 200 वर्ष पूरे होने पर उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया था। 43 वर्ष की आयु में 6 जनवरी 1852 को लुई ब्रेल का निधन हो गया लेकिन उनकी खोजी ब्रेल लिपि ने आज विश्वभर में दृष्टिहीनों तथा आंशिक रूप से नेत्रहीनों की जिंदगी को बहुत आसान बना दिया है।

स्त्री के अस्तित्व और अस्मिता का भाष्य करती एक फिल्म

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

एक वह भी समय था जब हम टॉकीज में किसी नई फिल्म के रिलीज़ होने का इन्तजार करते थे। लेकिन अब ओटीटी एक बढ़िया विकल्प बन गया है ।आप घर बैठे ही पूरे परिवार के साथ नई वेबसिरीज़ और फिल्म का आनन्द ले सकते है। बीते साल दिसम्बर के आखिरी सप्ताह में भी ओटीटी पर कई शो और फिल्में रिलीज़ हुईं जिनमें से एक फिल्म थी - 'सिंगल सलमा'। दो घण्टे यहीं इस रोमांटिक कॉमेडी का क्लाइमेक्स है ।

एक स्त्री के अस्तित्व और उसकी अस्मिता का भाष्य करने वाली यह फिल्म इस सच को सामने लिखती हैं कि कैसे एक स्त्री जो पूरे परिवार को सहारा देती है वह इस सबके बावजूद भी विचल (अनसेटल्ड) करार दी जाती है क्योंकि उसकी शादी नहीं हुई है । यह फिल्म ना सिर्फ एक स्त्री के स्वतंत्र (इंडीपेंडेंट) होने की जरुरत दिखाती है बल्कि समाज की उस सच्चाई से भी परदा उठाती है जिससे हम हर रोज रूबरू होते हैं लेकिन कहीं ना कहीं उसे नज़रअन्दाज़ भी करते हैं। एक लड़की को जिन्दगी में सफल होने के बावजूद उसकी शादी होने पर ही उसे सैटल्ड क्यों माना जाता है इस एक मुद्दे को फिल्म में बड़े रोचक अन्दाज़ में उठाया गया है ।

हुमा कुरैशी, श्रेयस तलपड़े और सनी सिंह की यह फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज़ होने के

करीब दो महीने बाद ओटीटी पर रिलीज हुई है। नचिकेत सामन्त के निर्देशन में बना यह कॉमेडी-ड्रामा अक्टूबर महीने में थिएटर्स में आया था। यह कम दिलचस्प नहीं है कि बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म असफल साबित हुई है लेकिन अधिकांश समीक्षाओं में इसकी तुलना कंगना रनौत की 'क्वीन' से की गई है गोया एक ऐसी फिल्म जो हँसी-मजाक के बहाने समाज में लड़की की उम्र तीस होते ही उन चिन्ताओं को दिखाती है, जो घर-परिवार, गाँव-जवार, मोहल्ले-रिश्तेदार के कारण सिरदर्द से कम नहीं है।

यह उन लड़कियों की कहानी है जिन्हें समाज अक्सर अपनी ज़िंदगी की 'अनसुलझी पहेली' मानता है। अगर आप एक परिवार-केंद्रित, सरल और दिल को छूने वाला ड्रामा देखना चाहते हैं जिसमें एक महिला के नज़रिए को महत्व दिया गया हो, तो यह फ़िल्म ज़रूर देखनी चाहिए। यह फ़िल्म आपको चौंकाएगी नहीं, पर यह आपको सोचने पर मज़बूर ज़रूर करेगी। हुमा कुरैशी की दमदार मौजूदगी के कारण यह फ़िल्म देखी जा सकती है, भले ही इसकी कहानी में कुछ कड़ियाँ कमज़ोर पड़ गई हों।

उन्नीस मिनट की यह फिल्म एक रोमाण्टिक कॉमेडी है जो नेटफ्लिक्स पर टॉप फाइव फिल्मों में ट्रेण्ड कर रही है।हुमा कुरैशी की यह फिल्म गत 26 दिसम्बर को नेटफ्लिक्स पर रिलीज़ हुई। फिल्म में हुमा के साथ श्रेयस तलपड़े, सनी सिंह ने केन्द्रीय भूमिकाएं निभाई हैं और इस रोमांटिक कॉमेडी में हुमा ने सलमा रिजवी का भूमिका निभाई है।

यह कहानी एक ऐसी लड़की की है जो लखनऊ में रहती है और इंजीनियर है। अपनी आमदनी से वह घर का खर्चा भी उठाती है, उसकी जिन्दगी घर चलाने से अपनी पहचान बनाने की ओर मुड़ जाती है जब उसकी सगाई हो जाती है, लेकिन फिर वह काम के सिलसिले में लंदन जाती है । जहाँ उसकी मुलाकात एक ऐसे शख्स से होती है, जो उसकी अरेंज मैरिज और पहचान को चुनौती देता है। यह कहानी आजादी, सामाजिक दबाव और परिवार की जिम्मेदारियों से ऊपर अपनी खुशी खोजने जैसे विषयों को दिखाती है। अब वह लड़की लखनऊ में अरेंज मैरिज और लंदन में चल रहे अपने लव इंटरेस्ट के बीच फँस जाती है और एक वक्त ऐसा आता है जब दोनों ही उसके दरवाजे पर बारात लेकर पहुँच जाते हैं और

कांग्रेस कार्यालय में क्रान्तिज्योति सावित्री बाई फुले जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित कर भावपूर्ण नमन किया

भोपाल। इस अवसर पर अनुसूचित जाति विभाग के नेतृत्व में कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग की नवगठित प्रदेश कार्यकारिणी के पदभार ग्रहण एवं नियुक्ति आदेश वितरण का कार्यक्रम गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद श्री दिग्विजय सिंह जी, पूर्व मंत्री श्री सुरेंद्र चौधरी जी, पूर्व गृहमंत्री श्री महेंद्र बौद्ध जी, संगठन उपाध्यक्ष श्री सुखदेव पांसे जी, प्रकोष्ठ प्रभारी श्री महेंद्र चौहान जी, अनुसूचित जाति विभाग के प्रदेश

अध्यक्ष श्री प्रदीप अहिरवार जी, अनुसूचित जाति सेल की प्रभारी श्री भगवती चौधरी जी एवं श्री हेमंत नरवरिया जी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी जी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जिस सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता की ऐतिहासिक लड़ाई बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने दशकों पहले शुरू की थी, आज भाजपा के शासन में उसी विचारधारा और संवैधानिक मूल्यों को कुचलने का लगातार प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे समय में आदरणीय राहुल गांधी जी पूरे देश में संविधान, सामाजिक न्याय और समानता की उस लड़ाई को मजबूती के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

श्री पटवारी जी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी क्रान्तिज्योति सावित्री बाई फुले जी के शिक्षा, समानता और सामाजिक न्याय के विचारों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक अधिकार, सम्मान और अवसर पहुँचाने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। अनुसूचित जाति विभाग की नवगठित प्रदेश कार्यकारिणी संगठन को जमीनी स्तर पर और अधिक सशक्त बनाने का कार्य करेगी। इसी दौरान कांग्रेस पार्टी ने इंदौर में हुई गंभीर और दुर्भाग्यपूर्ण घटना को लेकर भाजपा सरकार को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय जी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए तत्काल इस्तीफा दें तथा इंदौर की महापौर पर एफआईआर दर्ज की जाए। कांग्रेस ने स्पष्ट किया कि यदि सरकार दोषियों को बचाने का प्रयास करती रही, तो कांग्रेस पार्टी 11 जनवरी को इंदौर में लोकतांत्रिक तरीके से जंगी आंदोलन करेगी, जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी भाजपा सरकार की होगी। मध्य प्रदेश की पूर्व कांग्रेस सरकार ने दलित और आदिवासी परिवारों को जमीन के पट्टे वितरित किए थे, ताकि उन्हें उनका अधिकार सुरक्षित रूप से मिल सके। हालांकि, वर्तमान समय में ये पट्टे भाजपा नेताओं और उनके समर्थकों के कब्जे में चले गए हैं, जिससे कानून और व्यवस्था की स्थिति पर सवाल उठते हैं।श्री दिग्विजय सिंह ने इस पर चिंता जताते हुए कहा कि यह स्थिति सामाजिक न्याय और कमजोर वर्गों के अधिकारों के खिलाफ है। मध्य प्रदेश कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग के अध्यक्ष श्री प्रदीप अहिरवार ने बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के अपमान की घटनाओं पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

4 जनवरी को ऐतिहासिक धारा नगरी में हजारों- हजार हिन्दू परिवार एकता, जागरूकता एवं संगठन शक्ति का संदेश देंगे

शताब्दी वर्ष भव्य हिन्दू सम्मेलन में 14 बस्तियों में जुटेंगे हजारों हिन्दू परिवार

धार से राजेश शर्मा

4 जनवरी की तिथि को ऐतिहासिक धारा नगरी एक नया इतिहास रचने जा रही हैं। अनूठे और भव्य आयोजन में धार की धरा पर हजारों-हजार हिन्दू परिवार उपस्थित होकर एकता, जागरूकता एवं संगठन शक्ति का संदेश देंगे। यह आयोजन सामाजिक एकजुटता, संगठन शक्ति एवं सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बनने जा रहा है। अवसर है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर शहर की 14 बस्तियों में एक साथ भव्य हिन्दू सम्मेलन का। आयोजन को यादगार बनाने के लिये बीते कई दिनों से हर कोई अपने- अपने स्तर से जतन कर रहा है। धार शहर को 14 बस्तियों में बांटा गया हैं। हर बस्तियों में उत्साह देखते ही बनता है । 4 जनवरी का दिन मानों किसी उत्सव और उल्लास का दिन। प्रबुद्ध जन, वरिष्ठ कार्यकर्ता, समाज के प्रतिष्ठित नागरिक, साधु संतों की उपस्थिति इस आयोजन को यादगार बनांएगी। हिन्दू सम्मेलन केवल एक आयोजन नही बल्कि समाज जागरण एवं संगठन शक्ति का प्रतीक बनने जा रहा है और हजारों- हजार हिन्दू जनों की उपस्थिति इसे भव्य और ऐतिहासिक स्वरुप प्रदान करेंगी।

सम्मेलन में महत्वपूर्ण विषयों पर मार्गदर्शन दिया जाएगा..

सम्मेलन के दौरान समाज की एकता, राष्ट्र निर्माण में हिन्दू समाज की भूमिका, सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण, परिवार संस्था की मजबूती, युवा पीढ़ी में राष्ट्रभाव जागरण सेवा कार्यों तथा पंच परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर मार्गदर्शन दिया जाएगा। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य समाज में संगठन की भावना को और मजबूत करना, सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना तथा प्रत्येक परिवार तक सकारात्मक, रचनात्मक और राष्ट्रहित के संदेश को पहुँचाना है। विशेष रूप से युवाओं, महिलाओं और बालक-बालिकाओं की सहभागिता पर बल दिया गया है, ताकि आने वाली पीढ़ी सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सजग और संगठित बन सके।

आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यापक तैयारियाँ की गई हैं

आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यापक तैयारियाँ की गई हैं। सभी बस्तियों में अलग-अलग समितियाँ गठित की गई हैं, जो व्यवस्था, स्वागत, जलपान, बैठने की व्यवस्था, मंच संचालन और अनुशासन की जिम्मेदारी संभालेंगी। कार्यक्रम स्थल पर स्वच्छता, सुरक्षा और यातायात व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया है।

शहर की 14 बस्तियों में निर्धारित आयोजन स्थल

1 वीर तेजाजी बस्ती – शिव मंदिर परिसर, केलाश नगर
2 राजा भोज बस्ती – मिश्रा जी का खेत
3 दीनदयाल बस्ती – जाट समाज धर्मशाला
4 महाराणा प्रताप बस्ती – अभिव्यक्ति स्थल, त्रिमूर्ति चौराहा
5 त्रिमूर्ति बस्ती – मातेश्री गार्डन
6 वीर सावरकर बस्ती – श्रीराम चौक
7 फड़के बस्ती – खाटूश्याम मंदिर, महालक्ष्मी नगर
8 सुभाष चंद्र बोस बस्ती – लक्ष्मी गार्डन, ओंकार नगर
9 ज्योतिबा फुले बस्ती – अखंड ज्योति मंदिर
मधुकरी बस्ती – मंडी प्रांगण
1 विवेकानंद बस्ती – रतन हब
2 गुरु गोविंद सिंह बस्ती – धरेश्वर मंदिर परिसर
3 नित्यानंद बस्ती – श्रद्धा गार्डन
4 शिवाजी बस्ती – किला मैदान

इन्दौर में दूषित जल से 15 मौतें, 500 से अधिक बीमार मानव निर्मित त्रासदी: अरूण यादव

देश-विदेश में इन्दौर की छवि को गहरा आघात, महापौर व मंत्री कैलाश विजयवर्गीय नैतिकता के आधार पर दें इस्तीफा

खरगोन। पूर्व केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री एवं मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष अरूण यादव ने इन्दौर के भागीरथपुरा में दूषित जल पीने से 15 नागरिकों की असमय व दर्दनाक मृत्यु तथा 500 से अधिक लोगों के गंभीर रूप से बीमार होने की घटना पर गहरा शोक एवं आक्रोश व्यक्त किया है। उन्होंने इसे प्रशासनिक लापरवाही और संवेदनहीन शासन व्यवस्था का परिणाम बताते हुए कहा कि यह घटना देश, प्रदेश ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इन्दौर को शर्मसार करने वाली है।

श्री यादव ने कहा कि इन्दौर को वर्षों से स्वच्छता में देश का सिरमौर बताया जा रहा है, लेकिन यह घटना यह साबित करती है कि सिर्फ दिखावटी स्वच्छता से नागरिकों की जान सुरक्षित नहीं होती। ÷यहाँ 'दिया तले अंधेरा' की कहावत पूरी तरह चरितार्थ हो रही है। जिस शहर को मॉडल सिटी कहा जाता है, वहां नागरिकों को पीने का सुरक्षित पानी तक नसीब नहीं हो पा रहा।÷ उन्होंने कहा कि इस हृदयविदारक घटना से समूचे देश और प्रदेश के नागरिकों को गहरा आघात पहुंचा है। यह कोई प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि मानव निर्मित त्रासदी है, जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी शासन-प्रशासन और नगर निगम की है।

अरूण यादव ने कहा कि इन्दौर में लगातार वर्षों से भाजपा का प्रतिनिधित्व रहा है। महापौर, विधायक और कैबिनेट मंत्री इन्दौर से ही हैं, इसके बावजूद उनकी नाक के नीचे इस तरह की गंभीर लापरवाही होना शासन की विफलता और प्रशासनिक नाकामी को दर्शाता है। श्री यादव ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि - इन्दौर के महापौर को नैतिकता के आधार पर तत्काल इस्तीफा देना चाहिए। मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय को भी इस गंभीर चूक की जिम्मेदारी लेते हुए पद से त्यागपत्र देना चाहिए। श्री यादव ने मांग की कि इस पूरे मामले की उच्च स्तरीय, निष्पक्ष एवं स्वतंत्र सीबीआई जांच कराई जाए ताकि सच्चाई सामने आ सके और किसी भी स्तर पर दोषी पाए जाने वाले अधिकारियों, ठेकेदारों एवं जिम्मेदार व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि दूषित जल आपूर्ति के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को तत्काल बर्खास्त किया जाए। मृतकों के परिजनों को पर्याप्त मुआवजा और बीमार नागरिकों को निःशुल्क व बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाए। अंत में श्री अरूण यादव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी इस गंभीर जनहित के मुद्दे पर पीड़ित परिवारों के साथ खड़ी है और जब तक दोषियों को सजा नहीं मिलती तथा पीड़ितों को न्याय नहीं मिलता, तब तक संघर्ष जारी रहेगा।

नाम है 'लंगड़ी' बाघिन पर कर दिया कमाल

तोड़ दिया 'कॉलर वाली' बहन का रिकॉर्ड,सबसे उम्रदराज बाघिन बनी

सिवनी। पेंच नेशनल पार्क की %लंगड़ी बाघिन% अब सिर्फ सिवनी ही नहीं, बल्कि पूरे मध्यप्रदेश की सबसे उम्रदराज जीवित बाघिन बन गई है। 18 साल की हो चुकी यह बाघिन, जो कभी अपनी शारीरिक कमजोरी के कारण चर्चा में थी, अब अपनी बहन %कॉलर वाली बाघिन% का रिकॉर्ड तोड़कर एक मिसाल बन गई है। कुछ साल पहले गायब होने पर इसकी मौत की अफवाहें उड़ी थीं, लेकिन हाल ही में पर्यटकों को देखकर यह साबित हो गया है कि यह अभी भी ज़िंदा है और अपने पुराने इलाके कर्माझिरी में लौट आई है। यह खास बाघिन पहली बार साल 2008 में पर्यटकों और गाइडों को दिखी थी। इसके एक अगले पैर के पंजे को अजीब तरह से रखने के कारण इसे %लंगड़ी% नाम दिया गया था। पेंच नेशनल पार्क के रिकॉर्ड में भी इसका ज़िक्र है। पेंच नेशनल पार्क के प्रबंधक बताते हैं कि यह %कॉलर वाली बाघिन% की बहन है। %कॉलर वाली बाघिन%, जिसका जन्म 2005 में हुआ था, 2022 में 17 साल की उम्र में मर गई थी। वहीं, 2008 में जन्मी %लंगड़ी बाघिन% अब 18 साल की हो चुकी है और 2026 तक भी जीवित है। इस तरह, %लंगड़ी बाघिन% ने अपनी ही बहन का रिकॉर्ड तोड़कर मध्यप्रदेश में सबसे ज़्यादा उम्रदराज बाघिन होने का कीर्तिमान स्थापित किया है।

उम्र के मामले में बनाया रिकॉर्ड

पेंच नेशनल पार्क के डिप्टी डायरेक्टर रजनीश सिंह ने बताया, %पेंच नेशनल की बाघिन कुछ सालों से दिखाई न देने के कारण लोगों ने अफवाह उड़ा दी थी लेकिन वह जीवित है और अक्टूबर और दिसंबर माह में पर्यटकों को दिखाई दी है जिसकी खूबसूरत तस्वीर भी सामने आई है। जो 2008 में पहली बार दिखाई दी थी जिसके रिकॉर्ड भी मौजूद है, वह 17 वर्ष की उम्र पार कर चुकी है.. अभी शारीरिक रूप से कमजोर हो चुकी है बावजूद सरवाइप कर रही है।% हालांकि %लंगड़ी बाघिन% अब शारीरिक रूप से थोड़ी कमजोर हो गई है, फिर भी वह अपने इलाके में सर्वाइव कर रही है। अक्टूबर और दिसंबर में पर्यटकों को इसे देखकर खुशी हुई है। पेंच प्रबंधक भी खुश हैं कि उन्हें प्रदेश की सबसे उम्रदराज बाघिन को देखने का मौका मिल रहा है।

सिवनी में नालों से गुजर रहीं पेयजल लाइनें बनी खतरा

इंदौर की घटना के बाद भी प्रशासन बेपरवाह, नहीं दे रहा ध्यान

जबलपुर। इंदौर के भागीरथपुरा इलाके में दूषित पानी से हुई घटना में 15 लोगों की मौत ने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया है। सबसे साफ शहर में हाहाकार मचा हुआ है। इसके बाद भी प्रशासन की लापरवाही थमती नजर नहीं आ रही है। सिवनी शहर में पेयजल लाइन के हालात चिंताजनक है और इसको लेकर प्रशासन गंभीर नहीं है। दरअसल, शहर में घरेलू और व्यवसायिक करीब 18 हजार नल कनेक्शन हैं। अधिकांश कनेक्शन नाले और नालियों से होकर गुजरी पेयजल लाइन से हैं। यदि लीकेज की समस्या हुई तो गंभीर समस्या बन सकती है। जहां प्रशासन खुद कहता है कि शुद्ध जल का ही उपयोग करें। बावजूद भी ऐसी लाइनों को लेकर कोई व्यवस्था नहीं की जा रही। नवीन जलावर्धन योजना की मुख्य पाइप लाइनें शहर के नालों से होकर गुजरी हैं। दो पाइप वाला ज्वाइंट सेक्शन भी बीच नाले में है। यदि लीकेज हुआ तो दूषित पानी पाइप के अंदर जाकर नलों से घरों तक पहुंच जाएगा। यह दूषित पानी कई लोगों को बीमार कर सकता है। शहर बस स्टैंड के पास नाले में यह स्थिति देखी जा सकती है। जलावर्धन योजना की डिस्ट्रीब्यूटर पाइप लाइन से घरेलु कनेक्शन दिए गए हैं। यह कनेक्शन सडक़ किनारे डाली गई लाइन से दिए गए हैं जो कि रोड किनारे स्थित नालियों से होकर गुजरी हैं। पाइन नालियों में डूबे रहते हैं। शहर में कई जगह पाइप लाइन फूटने की शिकायतें मिलती रहती हैं। हालांकि अभी तक दूषित पानी को लेकर कोई गंभीर शिकायत सामने नहीं आई है। जिला अस्पताल के शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ विनोद दहायत का कहना है कि दूषित पानी जानलेवा भी हो सकता है। इसके कारण उल्टी-दस्त की शिकायत होती है। दूषित पानी से लिवर, आंत और स्टमक प्रभावित होता है। इसलिए हमेशा साफ पानी पीना चाहिए।

भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह 4 एवं 5 को मुरैना, भिंण्ड एवं ग्वालियर जिलों के प्रवास पर रहेंगे

प्रवास के दौरान विभिन्न जिलों में आयोजित बैठकों को करेंगे संबोधित

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह दो दिवसीय प्रदेश प्रवास पर रहेंगे। आप 4 जनवरी को मुरैना, भिंण्ड व ग्वालियर नगर एवं 5 जनवरी को ग्वालियर ग्रामीण जिले के प्रवास के दौरान विभिन्न जिलों में आयोजित विधानसभाओं की बैठकों को संबोधित करेंगे। भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह 4 जनवरी को प्रातः 10.30 बजे दिमनी, प्रातः 11.30 बजे अंबाह एवं दोपहर 2 बजे मेहगांव में मेहगांव व गोहद की विधानसभा बैठकों को संबोधित करेंगे। आप सायं 4 बजे भिंड पहुंचकर भिंड, अटेर व लहार विधानसभा एवं सायं 7 बजे ग्वालियर में ग्वालियर, ग्वालियर पूर्व एवं ग्वालियर दक्षिण विधानसभाओं की बैठकों को संबोधित करेंगे। आप 5 जनवरी को प्रातः 11 बजे ग्वालियर ग्रामीण की डबरा, भितरवार व ग्वालियर ग्रामीण विधानसभाओं की बैठकों को संबोधित करेंगे।

भोपाल में तेज रफ्तार कार ने ऑटो को मारी टक्कर

भोपाल। भोपाल के बैरागढ़ इलाके में तेज रफ्तार अल्ट्रोज कार ने सीएनजी ऑटो को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में घायल ऑटो चालक की इलाज के दौरान आज सुबह मौत हो गई। जबकि हादसा शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात का है। नरेश यादव (36) पिता शंकर यादव निवासी बैरागढ़ गांव सीएनजी ऑटो का चालक था। शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात ड्यूटी पूरी करने के बाद घर लौट रहा था। तभी बैरागढ़ में रोड पर सीहोर तरफ से आ रही एक कर में उसे जोरदार टक्कर मार दी। घटना आकाश गार्डन के सामने की है। घायल को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उपचार के दौरान आज सुबह उसकी मौत हो गई। अस्पताल की सूचना पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। मृतक के भांजे अजय यादव ने बताया कि कार को एक महिला ड्राइव कर रही थी।

'ठंडे भजिया' पर बहस, जबलपुर में जमकर बवाल

आधी रात को लाठीचार्ज,8 थानों की पुलिस ने संभाला मोर्चा

जबलपुर। मध्य प्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर में महज %ठंडे भजिया% का विवाद सांप्रदायिक और जातिगत विवाद में तब्दील हो गया। हालात यहां तक पहुंच गए कि कई थानों की पुलिस को स्थिति संभालना पड़ी। सैकड़ों लोगों की भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज तक करना पड़ा। फिलहाल पुलिस ने तीन लोगों को हिरासत में लिया है। जानकारी अनुसार जबलपुर के कमानिया गेट बड़ा फुहारा क्षेत्र में बीती देर रात उस वक्त हड़कंप मच गया, जब एक प्रसिद्ध मिष्ठान भंडार में खाने को लेकर शुरू हुआ मामूली विवाद सांप्रदायिक तनाव में बदल गया। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को बल प्रयोग और लाठीचार्ज करना पड़ा, जिसमें प्रदर्शनकारियों के साथ-साथ कुछ पुलिसकर्मी भी घायल हुए हैं। पुलिस के अनुसार घटना रात करीब साढ़े 11 बजे के आसपास की है। जानकारी के अनुसार, स्थानीय निवासी राजकुमार जैन कमानिया गेट स्थित बड़कुल स्वीट्स पर भजिया लेने पहुंचे थे। उन्होंने भजिया ठंडी होने की शिकायत की, जिस पर काउंटर मैनेजर रोहित राजपूत से उनकी तीखी बहस हो गई। आरोप है कि विवाद बढ़ने पर मैनेजर ने अपने साथियों को फोन कर बुलाया, जो बेसबॉल बैट और डंडे लेकर पहुंचे और राजकुमार जैन के साथ मारपीट की।

एक महीने में एसआईआर हो सकती है,जातिगत जनगणना क्यों नहीं

सांसद चंद्रशेखर बोले-बीजेपी ने मोहन को सीएम बनाया, अब उन्हें हटाने की साजिश हो रही

भोपाल। नगीना सांसद और आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद ने भोपाल के सिंधु भवन में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए सत्ता, संविधान और अल्पसंख्यक अधिकारों को लेकर सरकारों पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि अगर समाज ने अपनी ताकत नहीं बनाई, तो रोज कोई अपमानजनक शब्द बोलेगा और लोग मुकदमा कराने के लिए भटकते रहेंगे, लेकिन हालात नहीं बदलेंगे। आजाद पिछले दिनों भोपाल के सिंधु भवन में आयोजित आजाद समाज पार्टी और भीम आर्मी के कार्यकर्ताओं की बैठक में शामिल हुए थे। आजाद ने सरकार को खुली चुनौती देते हुए कहा कि यदि जातिगत जनगणना करा ली जाए, तो एससी, एसटी, ओबीसी और माइनॉरिटी की आबादी 90 प्रतिशत के आसपास निकलेगी। उन्होंने सवाल उठाया कि जब चुनाव आयोग एक महीने में सौ करोड़ लोगों की एसआईआर (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) कर सकता है, तो 11-12 साल में जातिगत जनगणना क्यों नहीं हो पा रही। कभी बजट का बहाना, कभी समय की कमी, ये सिर्फ टालने के तरीके हैं।

1931 से मंडल तक: पिछड़ों के साथ हुआ धोखा- चंद्रशेखर आजाद ने इतिहास का हवाला देते हुए कहा कि 1931 की जातिगत जनगणना में मध्यप्रदेश में पिछड़ा वर्ग 52 प्रतिशत था। इसके बाद काका कालेलकर आयोग की रिपोर्ट को कांग्रेस सरकार ने डस्टबिन में डाल दिया। मंडल आयोग की सिफारिशें लागू होने के समय भाजपा ने समर्थन वापस ले लिया। आज भी मंडल आयोग की 38 सिफारिशें लंबित हैं, जिनके लागू होने से पिछड़े वर्गों को बड़ा लाभ मिल सकता है।

पिछड़ा मुख्यमंत्री, लेकिन सम्मान नहीं- उन्होंने कहा कि सरकारें पिछड़ा विरोधी हैं। संख्या के दबाव में पिछड़ा वर्ग का मुख्यमंत्री तो बना दिया जाता है, लेकिन सम्मान नहीं दिया जाता। शिवराज सिंह चौहान के समय संगठन विशेष द्वारा मां-बहन की गालियां दी गईं। अब मोहन यादव मुख्यमंत्री बने तो उनसे वैचारिक विरोध अलग बात है, लेकिन 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण की बात करते ही उन्हें हटाने की कोशिशें और जातिगत गालियां शुरू हो गईं। इससे साफ है कि पिछड़े वर्ग का असली सम्मान किस पार्टी में है। चंद्रशेखर आजाद ने कहा कि जब कांशीराम साहब के नेतृत्व में पिछड़ा आंदोलन चला था, तब मध्यप्रदेश से तीन निर्दलीय सांसद बने थे। इनमें सुखलाल कुशवाह, बुद्धसेन पटेल और भीमसेन पटेल शामिल हैं। उन्होंने कहा कि जब कमजोर वर्ग एकजुट होता है, तभी राजनीतिक बदलाव आता है।

एसआईआर के नाम पर 2.98 करोड़ वोट कटे- उन्होंने आरोप लगाया कि एसआईआर के जरिए 2.98 करोड़ वोट काट दिए गए। तुलना करते हुए कहा कि ऑस्ट्रेलिया की पूरी आबादी 2 करोड़ 80 लाख से कम है, लेकिन उससे ज्यादा वोट सिर्फ उत्तर प्रदेश में काट दिए गए। जबकि एक-डेढ़ साल पहले इन्हीं वोटर लिस्ट पर चुनाव कराए गए थे। इसका मतलब साफ है कि कमजोर वर्गों के वोट योजनाबद्ध तरीके से छीने जा रहे हैं। चंद्रशेखर आजाद ने कहा कि बाबा साहब अंबेडकर द्वारा दिए गए आरक्षण का विरोध वही लोग कर रहे हैं, जो पिछले 5-6 सालों से खुद ईडब्ल्यूएस आरक्षण का लाभ उठा रहे हैं।

ऑल टाइम हिट की तरफ बढ़ती 'धुरंधर'

आदित्य धर की फिल्म 'धुरंधर' का धमाल अभी जारी है। इस फिल्म ने परदे पर इतनी धूम मचा दी कि कई फिल्मों की रिलीज को आगे बढ़ा दिया गया। इस फिल्म ने कमाई में नया रिकॉर्ड बनाने के साथ अक्षय खन्ना जैसे कलाकार को नई पहचान भी दी। 250 करोड़ के बजट में बनी 'धुरंधर' वर्ल्ड वाइड 1200 करोड़ की कमाई की तरफ बढ़ चुकी है। अब वो 'पुष्पा-2' को पछाड़ने की तैयारी में है। लेकिन, यदि उसे सबसे ज्यादा कमाई वाली फिल्म बनना है, तो 2000 करोड़ से ज्यादा कमाई करना होगी, जो आमिर खान की 'दंगल' के नाम दर्ज है।

रणवीर सिंह और अक्षय खन्ना की 'धुरंधर' 5 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। चार हफ्तों में फिल्म ने 1000 करोड़ का कलेक्शन हासिल कर लिया। जबकि, अभी भी फिल्म की कमाई जारी है। भारत में फिल्म ने 784.50 करोड़ की कमाई हासिल कर ली, वहीं वर्ल्डवाइड आंकड़ा 1200 करोड़ की तरफ बढ़ चुका। इसके चलते शाहरुख खान की 'जवान' भी कमाई के मामले में 'धुरंधर' से पीछे हो गई। लेकिन, 'पुष्पा-2' को पछाड़ने के लिए 'धुरंधर' को अभी और कमाई करनी होगी।

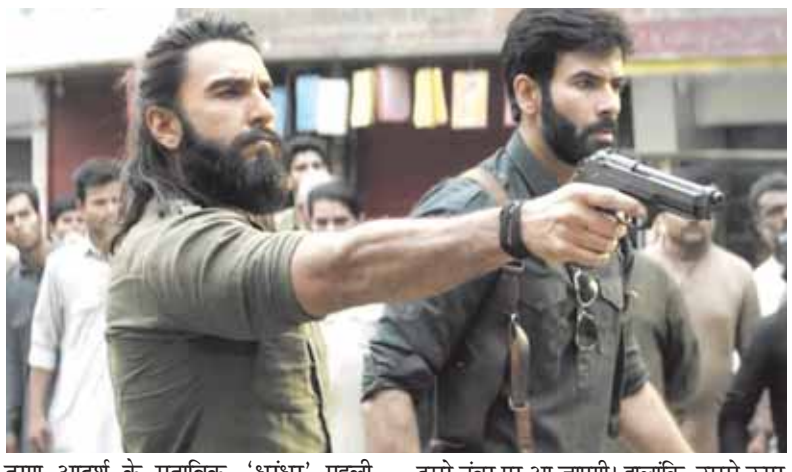

बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के शुरुआती आंकड़ों के अनुसार, धुरंधर ने 29वें दिन 8.75 करोड़ का कलेक्शन किया। इसके बाद भारत में नेट कलेक्शन 747.75 करोड़ हुआ। वहीं ग्रॉस कलेक्शन 897.25 करोड़ तक पहुंच गया। जबकि, वर्ल्डवाइड कलेक्शन 1162.25 करोड़ हुआ। इसके चलते फिल्म ऑल टाइम ब्लॉकबस्टर का खिताब हासिल कर चुकी और शाहरुख खान की 'जवान' जिसका लाइफटाइम कलेक्शन 1,148.32 करोड़ था, उसे 'धुरंधर' पीछे छोड़ चुकी है।

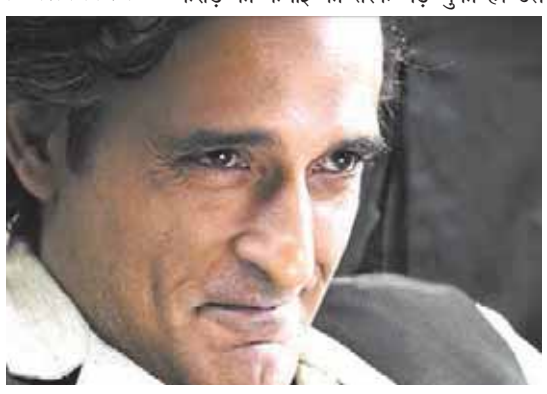

इससे पहले 'धुरंधर' के मेकर्स यानी जियो स्टूडियोज ने 28 दिनों की कमाई शेयर की थी। जिसके मुताबिक भारत में पहले हफ्ते 'धुरंधर' ने 218 करोड़, दूसरे हफ्ते 261.5 करोड़, तीसरे हफ्ते 189.3 करोड़ और चौथे हफ्ते 115.70 करोड़ की कमाई की। इसके बाद भारत में आंकड़ा 784.50 करोड़ तक पहुंचा है। ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श के मुताबिक, 'धुरंधर' पहली हिंदी फिल्म है, जिसने चौथे हफ्ते में 100 करोड़ का आंकड़ा पार किया।

250 करोड़ के बजट में बनी धुरंधर 1200 करोड़ की कमाई की तरफ बढ़ चुकी है। उसे 400-500 करोड़ के बजट में बनीं 'पुष्पा-2' को पछाड़ने के लिए 1,642-1,800 करोड़ का कलेक्शन हासिल करना होगा, जिसे आने वाले दिनों में 'धुरंधर' हासिल करती है तो वह भारत की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में दूसरे नंबर पर आ जाएगी। हालांकि, उससे ऊपर आमिर खान की दंगल है, जिसका कलेक्शन 2000 करोड़ के पार है। फिल्म 'धुरंधर' को लेकर एक अहम प्रशासनिक फैसला भी सामने आया। केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख में फिल्म को टैक्स फ्री घोषित किया गया। यह जानकारी लद्दाख के उपराज्यपाल कार्यालय की ओर से सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर साझा की गई। उपराज्यपाल कविंदर गुप्ता ने अपने आधिकारिक बयान में कहा कि आदित्य धर निर्देशित इस फिल्म को लद्दाख में एंटरटेनमेंट टैक्स से छूट दी जाएगी।

फिल्म के बॉक्स ऑफिस पर लगातार अच्छे प्रदर्शन और दर्शकों की प्रतिक्रिया के बीच यह फैसला लिया गया। लद्दाख प्रशासन की ओर से जारी बयान में यह भी कहा गया कि फिल्म की शूटिंग क्षेत्र में बड़े पैमाने पर की गई, जिससे न सिर्फ लद्दाख की भौगोलिक और सांस्कृतिक पहचान को पर्दे पर जगह मिली, बल्कि भविष्य में फिल्म निर्माण को लेकर इस क्षेत्र की संभावनाओं को भी बल मिला है।

रियल बॉक्स

हिट की संख्या उंगलियों पर, फ्लॉप का ढेर

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी सिनेमा के लिए यह यादगार साल साबित हुआ। कई फ्लॉप फिल्मों के बीच तीन अलग-अलग जॉनर की फिल्मों ने दर्शकों के दिलों को जीत लिया। ये अपने आप में अलग तरह का अनुभव कहा जा सकता है। ऐतिहासिक ड्रामा फिल्म छावा, स्पाई थ्रिलर 'धुरंधर' और इमोशनल फैमिली फिल्म 'सैयारा' ने दर्शकों को थियेटरों तक खींचा। यही वजह है कि इस साल बॉक्स ऑफिस पर हिंदी फिल्मों ने 4000 करोड़ से ज्यादा का आंकड़ा पार किया। कुछ फिल्मों ने 500 से 600 करोड़ से ऊपर की कमाई कर रिकॉर्ड भी तोड़े। इस साल 100 करोड़ के क्लब में 17 से ज्यादा फिल्में शामिल हुईं, लेकिन, खास बात यह भी कि इस साल चुनिंदा हीरो-हीरोइन ही अपनी चमक बिखेर सके। दर्शकों पर जादू बिखेरने वाली फिल्मों ने भावनात्मक गहराई, एक्शन और सांस्कृतिक जुड़ाव से सफलता पाई। यह साल सफलताओं और असफलताओं का मिश्रण रहा। जबकि, कई बड़े सितारों की फिल्में उम्मीदों से पीछे रहीं। 100 से अधिक हिंदी फिल्में रिलीज हुईं, जिनमें से लगभग 10 से 15 ने हिट या सुपरहिट का दर्जा पाया, जबकि 70 प्रतिशत से ज्यादा फ्लॉप साबित हुईं। 'छावा' ने विक्की कौशल की अगुवाई में 585.7 करोड़ कमाए, जो ऐतिहासिक बायोपिक का नया रिकॉर्ड बना।

'धुरंधर' (रणवीर सिंह, अक्षय खन्ना) ने 650 करोड़ से ज्यादा की कमाई के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। इस फिल्म का अक्षय खन्ना का नेगेटिव रोल दर्शकों के दिलों में उतर गया। 'सैयारा' (अहान पांडे, अनीता पड्डा) ने 329.73 करोड़ कमाकर रोमांटिक धमाका किया। 'महावतार नरसिम्हा' (188.24 करोड़ नेट) और 'रेड-2' (173.44 करोड़ नेट) ने भी मजबूती से प्रदर्शन किया। आमिर खान की 'सितारे जमीन पर' ने इमोशनल अपील से 166.19 करोड़ की कमाई की। ये फिल्में दर्शकों को जोड़ने वाली कहानियों पर बनीं, जहां ट्रेलर वायरल होने से ओपनिंग दिन 20-30 करोड़ तक पहुंची। कहा जा सकता है कि ये कंटेंट-ड्रिवेन फिल्में स्टार पावर पर भारी पड़ीं। 17 फिल्मों ने 100 करोड़ क्लब में जगह बनाई। लेकिन, जॉली एलएलबी-3 (113 करोड़) ने भी उम्मीद से अच्छा प्रदर्शन किया। इन फिल्मों को सिर्फ सफलता ही हाथ नहीं लगी, कई फ़िल्में घाटे का सौदा रही। खासकर स्टार-कास्ट वाली कई फिल्में उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी। 'सिकंदर' (सलमान खान) ने 110.36 करोड़ नेट बनाए, लेकिन 200 करोड़ बजट के आगे फ्लॉप रही। 'हाउसफुल-5' (अक्षय कुमार) ने 183.38 करोड़ नेट कमाए, जो एवरेज साबित हुई। 'केसरी चैप्टर-2' और 'स्काई फोर्स' जैसी फिल्मों ने घाटा झेला, जहां 100-125 करोड़ नेट कमाई के बावजूद बजट रिकवर नहीं हुआ। 'इमरजेंसी' (कंगना रनौत) ने मात्र 18.4 करोड़ नेट कमाए, जो एक बड़ा झटका था। 'ठग लाइफ' जैसी साउथ डबिंग फिल्म भी फेल रही। कुल मिलाकर, 50 से अधिक हिंदी रिलीज में से आधी फ्लॉप या घाटे में रहीं, ये दर्शाता है कि बेहतर कंटेंट की कमी है।

जहां तक कलाकारों के जलवे की बात है तो विक्की कौशल सबसे सफल हीरो साबित हुए, 'छावा' की ब्लॉकबस्टर से वे करियर की ऊंचाई पर पहुंचे। अभी तक उन्हें सीरियसली नहीं लिया जाता था, पर 'छावा' से उन्होंने अपनी प्रतिभा का आकलन करवा दिया। लंबे अरसे बाद रणवीर सिंह ने 'धुरंधर' से कमबैक किया। लेकिन, सिनेमा घर से बाहर निकलने वाला दर्शक उन्हें याद नहीं करता। इस फिल्म में अक्षय खन्ना नेगेटिव रोल्स में जमकर चमके। इस फिल्म से उनकी विलेन की कालजयी इमेज बनी। आमिर खान ने 'सितारे जमीन पर' से फैमिली ऑडियंस का दिल तो जीता, पर उतना नहीं, जितनी उम्मीद की गई थी। जबकि, हीरोइनों में रश्मिका मंदाना (छावा) और अनीता पड्डा (सैयारा) ने मजबूत पकड़ बनाई। दिव्या दत्ता ने 'छावा' में सपोर्टिंग रोल से सराहना बटोरी। ये सभी इसलिए अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रहे कि इन्हें कंटेंट-ड्रिवेन फिल्मों में काम करने मौका मिला।

ऐतिहासिक महाकाव्य का तूफान बनकर आई 'छावा' ने 2025 की शुरुआत धमाकेदार तरीके से की। विक्की कौशल अभिनीत यह फिल्म छत्रपति संभाजी महाराज की वीरगाथा पर आधारित थी, जिसमें अक्षय खन्ना ने औरंगजेब का शक्तिशाली किरदार निभाया। रिलीज के पहले ही सप्ताह में 121 करोड़ का ओपनिंग वीकेंड दर्ज कर, यह वर्ष की सबसे बड़ी हिंदी हिट बनी। फिल्म में 808 करोड़ का वर्ल्डवाइड कलेक्शन किया। रश्मिका मंदाना की येसूबाई भूमिका ने भावनात्मक गहराई दी, जबकि एआर रहमान का संगीत सुपरहिट रहा। फिल्म ने न केवल बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड बनाए, बल्कि ऐतिहासिक ड्रामा के प्रति दर्शकों की भूख भी उजागर की। इसके बाद 'सैयारा' से न्यूकमर्स का सनसनीखेज रोमांस पनपा। अहान पांडे और अनीता पड्डा की इस डेब्यू फिल्म ने सभी को चौंका दिया। मोहित सूरी निर्देशित यह रोमांटिक ड्रामा 21 करोड़ ओपनिंग से शुरू होकर 570 करोड़ वर्ल्डवाइड तक पहुंची। इस फिल्म ने 'सुल्तान' और '3 इडियट्स' जैसी क्लासिक फिल्मों को भी पीछे छोड़ दिया। पांच दिनों में 133 करोड़ नेट कमाकर 'सैयारा' बड़ी हिट बनी। आईएमडीबी पॉपुलैरिटी में अहान नंबर 1 और अनीता नंबर 2 पर रहे, जो सोशल मीडिया का कमाल था। फिल्म ने साबित किया कि सशक्त स्क्रिप्ट और केमिस्ट्री किसी भी स्टारडम से बहुत ऊपर है।

इसके बाद साल के अंत में आई 'धुरंधर' ने दिसंबर में तो मानों तहलका ही मचा दिया। सिर्फ दो सप्ताह में देश में 483 करोड़ और वर्ल्डवाइड 739 करोड़ कमाकर इस फिल्म ने 'छावा' को भी पछाड़ दिया। 'छावा' के बाद इस फिल्म में भी अक्षय खन्ना ने विलेन की भूमिका निभाई और अपनी अभिनय क्षमता को नई ऊंचाई दी। थर्ड वीकेंड में 103 करोड़ ओपनिंग के साथ तीसरी सबसे बड़ी बॉलीवुड ओपनर बनी। फिल्म ने एक्शन और ड्रामा का परफेक्ट ब्लेंड पेश किया, जो दर्शकों को थियेटर में बांधे रखा। अभी तक अपनी फिल्मों में जिस कलाकार को लगभग भुला दिया जाता था, 'धुरंधर' के आने से दर्शकों को सिर्फ अक्षय खन्ना ही याद रहता है।

इस साल बॉलीवुड से लेकर साउथ तक, कई फिल्मों ने धमाकेदार प्रदर्शन किया। बड़े बजट, बड़े स्टार और हाई प्रमोशन के बावजूद बॉलीवुड दर्शकों और क्रिटिक्स को प्रभावित करने में पिछड़ता नजर आया। इस साल ने एक बार फिर साबित किया कि रीजनल सिनेमा तेजी से दर्शकों में अपनी जगह बनाकर आगे बढ़ रहा है और फिल्म में कंटेंट ही असली बादशाह है। रीलीज हुई गुजराती फिल्म फिल्म 'लालो कृष्ण सदा सहाते' एक रिक्शा ड्राइवर की कहानी है, जो एक फार्म हाउस में फंस जाता है और उसे भगवान कृष्ण के होने का अहसास होता है। इससे उसकी जिंदगी बदल जाती है। इस फिल्म को आईएमडीबी पर 8.7 की रेटिंग मिली। 1950 के मद्रास की कहानी दिखाने वाली फिल्म 'कांथा' एक सोशल ट्रांसफॉर्मेशन की कहानी दिखाती है। फिल्म में भारत की स्वतंत्रता के बाद हुए बदलावों पर फोकस किया गया। फिल्म में दुलकर सलमान लीड रोल में हैं। इसे 8.4 की रेटिंग मिली है।

ऋषभ शेट्टी की फिल्म 'कांथारा चैप्टर 1' सिनेमाघरों में छाई रही। फिल्म की कहानी कदंब राजवंश काल के दौरान की है। इसे 8.3 रेटिंग मिली। दिनजीत अय्यथन के निर्देशन में बनी मलयालम की मिस्ट्री फिल्म 'ईको' को भी अच्छी रेटिंग मिली। फिल्म में संदीप प्रदीप, सिमी जी फी और शाहीर मोहम्मद लीड रोल में हैं। फिल्म को 8.3 की रेटिंग मिली हैं। एम शशिकुमार और सिमरन स्टार की कन्नड़ फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' की कहानी एक श्रीलंका के परिवार पर केंद्रित हैं, जो भारत में नई शुरुआत करने के लिए आता है। इसे 8.2 की रेटिंग मिली। इसी तरह की फिल्म 'बौ बुट्टू भूता' एक बच्चे बुट्टू और उसकी मां की कहानी, जो ओडिशा के एक गांव में रहते हैं। बिट्टू की चाहत है कि वो कहीं और जाकर बेहद जिंदगी जिएं। इसे 8.2 की रेटिंग मिली।

ईशान खट्टर, विशाल जेठवा और जाह्नवी कपूर स्टार नीरज घावन की फिल्म 'होमबाउंड' भी काफी चर्चित रही। नॉर्थ इंडिया के गांव से निकले दो दोस्ती पुलिस की नौकरी की तैयारी करते दिखाए गए हैं। दोनों के बीच तनाव पैदा होगा और कहानी गंभीर हो जाती है। फिल्म को 8.0 की रेटिंग मिली। ये अकेली हिंदी फिल्म है, जो आईडीबीआई रेटिंग की दस फिल्मों में शामिल हुई। आसिफ अली, अनसवारा राजन और मनोज के जायन स्टारर फिल्म 'रेखाचित्रम' को 7.9 की रेटिंग मिली है। कहानी मजेदार है और रहस्य से भरी हुई है। 'कोर्ट स्टेट वर्सेस ए नोबडी' फिल्म कहानी में एक भावुक बचाव वकील न्याय प्रणाली में पूर्वाग्रह और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ता है, जबकि वह एक किशोर मुवक्किल का प्रतिनिधित्व करता है जिसे गलत तरीके से एक गंभीर अपराध का दोषी मान लिया गया है। फिल्म को 7.9 की रेटिंग मिली। जबकि, 'बाइसन' को 7.8 की रेटिंग मिली है। फिल्म में एक नौजवान की कहानी दिखाई गई, जो अपने गांव में फैली हिंसा से लड़ने और एक प्रोफेशनल कबड्डी प्लेयर बनने के लिए लड़ता है।

2025 साल का सबसे बड़ा सबक यह है कि 'कंटेंट ही राजा' है। यह साल साबित करता है कि दर्शक स्टोरी और परफॉर्मेंस चाहते हैं। छावा, सैयारा, धुरंधर जैसी फिल्मों ने फ्लॉप फिल्मों के बीच बड़ा धमाका किया और बॉक्स ऑफिस को रिकॉर्ड ऊंचाई दी। इससे यह भी लगता है कि आने वाले समय में ऐतिहासिक और रोमांटिक कहानियों वाले जॉनर मजबूत रहेंगे। साल का दुखद पहलु यह रहा कि मनोज कुमार, धर्मेंद्र और असरानी हमेशा के लिए विदा हो गए। जबकि, कामिनी कौशल और संध्या शांताराम ने भी अपनी पारी पूरी कर ली।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

तृप्ति डिमरी का 'स्पिरिट' में धांसू फर्स्ट लुक

संदीप रेड्डी वांगा की अगली फिल्म 'स्पिरिट' का फर्स्ट लुक रिलीज हो गया। पहली जनवरी 2026 को रिलीज हुए इस लुक में प्रभास और तृप्ति डिमरी के अंदाज ने सोशल मीडिया पर जरूर धूम मचा दी। तृप्ति डिमरी को संदीप रेड्डी वांगा की 'एनिमल' ने ही रातों रात 'नेशनल क्रश' बना दिया। रणबीर कपूर के साथ उनका सपोर्टिंग रोल इतना वायरल हुआ कि फीस दोगुनी हो गई और बड़े प्रोजेक्ट्स की लाइन लग गई।

लेकिन, 1 जनवरी 2026 तक देखें, तो तृप्ति की थिएट्रिकल फिल्मों की संख्या 9 हो चुकी है। क्रिटिकली सराही जाने वाली एक्ट्रेस अब मेनस्ट्रीम कॉमेडी और रोमांस में शिफ्ट हो गई। लेकिन, बॉक्स ऑफिस पर उनका रिकॉर्ड मिक्स्ड से ज्यादा निराशाजनक लगता है। 'एनिमल' की सफलता के बाद उम्मीदें आसमान छू रही थीं, पर ज्यादातर फिल्में औसत या फ्लॉप रहीं।

शुरुआत 2017 में 'पोस्टर बॉयज' से हुई, जहां सनी-बॉबी देओल के साथ छोटा रोल था। फिल्म फ्लॉप रही और तृप्ति नोटिस भी नहीं हुईं। फिर 'लैला मजनूं' (2018) में लीड रोल मिला, क्रिटिक्स ने परफॉर्मेंस सराही। लेकिन बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह पिट गई। तृप्ति खुद मानती हैं कि फेलियर से डिप्रेशन हुआ। ओटीटी पर 'बुलबुल' (2020) और 'कला' (2022) ने उन्हें खूब तारीफ दिलाई। दोनों गहरे और इमोशनल रोल्स ने अवॉर्ड्स दिलाए। लेकिन, थिएट्रिकल कमर्शियल सक्सेस दूर रही।

करीना कपूर-पृथ्वीराज सुकुमारन की दायरा पूरी

करीना कपूर खान और पृथ्वीराज सुकुमारन की आने वाली फिल्म 'दायरा' की शूटिंग पूरी हो चुकी है और अब यह पोस्ट-प्रोडक्शन में पहुंच गई। मेघना गुलजार के निर्देशन में बनी यह इन्वेस्टिगेटिव क्राइम थ्रिलर साल 2026 में बड़े पर्दे पर दस्तक देगी। इस क्राइम थ्रिलर फिल्म 'दायरा' में सिर्फ अपराध ही नहीं, बल्कि छोटी-सी गलत हरकतों को दिखाया गया, जो धीरे-धीरे पूरे समाज को झकझोर कर रख देती है। मेघना गुलजार अपनी फिल्मों में हमेशा संवेदनशील मुद्दों को गहराई से पेश करती आई हैं। 'तलवार' और 'राजी' जैसी फिल्मों से उन्होंने यह साबित किया है कि वह सिर्फ कहानी नहीं कहतीं, बल्कि उसे महसूस भी करवाती हैं। 'दायरा' में भी उनका यही अंदाज देखने को मिलेगा। करीना कपूर इस फिल्म में एक गंभीर और मजबूत किरदार निभा रही हैं। उनके अभिनय में गहराई नजर आने वाली है। वहीं पृथ्वीराज सुकुमारन का किरदार भी कहानी को मजबूती देता है। दोनों कलाकार पहली बार इस तरह की थ्रिलर कहानी में साथ नजर आएंगे, जिससे दर्शकों की उम्मीदें और बढ़ गई। फिल्म को जंगली पिक्चर्स और पेन स्टूडियोज ने मिलकर प्रोड्यूस किया है। इसके अलावा फिल्म में एक मजबूत सपोर्टिंग कास्ट भी है, जो कहानी को और असरदार बनाती है। 'दायरा' मेघना गुलजार और जंगली पिक्चर्स का तीसरा कोलेबोरेशन है। शूटिंग पूरी होने के बाद फिल्म की टीम पोस्ट-प्रोडक्शन में जुट गई है। एडिटिंग, बैकग्राउंड स्कोर और बाकी तकनीकी काम पूरे होने के बाद यह फिल्म 2026 में बड़े पर्दे पर दस्तक देगी।

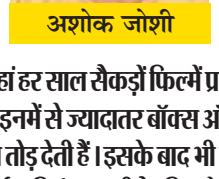

अशोक जोशी

छब्बीस का साल, क्या निर्माता को करेगा मालामाल

हमारे यहां हर साल सैकड़ों फिल्में प्रदर्शित होती हैं। इनमें से ज्यादातर बॉक्स ऑफिस पर ही दम तोड़ देती हैं। इसके बाद भी फिल्मों का निर्माण निरंतर जारी है। पिछले साल प्रदर्शित फिल्मों में से केवल 3 फिल्में

सैयारा, छावा और 'धुरंधर' ही सफलता की सीढ़ियां चढ़ पाई। बाकी की फिल्में या तो आधे रास्ते में ही बैठ गई, तो कुछ पहली पायदान पर ही थक गई। फिर भी फिल्मकारों को उम्मीद है कि इस साल उनकी जो फिल्म प्रदर्शित होगी, वह उनकी किस्मत के दरवाजे खोल देगी। अभी देखना है कि इन फिल्मों में कितना दम है!

हम जनवरी के मुहाने पर खड़े हैं और 'धुरंधर' अभी भी सिनेमाघरों में चल रही है। लेकिन, अब नए साल में भी कुछ धमाकेदार फिल्में दर्शकों के इंतजार में हैं। सनी देओल, धर्मेंद्र दोनों अलग-अलग फिल्मों में नजर आएंगे। साथ ही प्रभास के साथ संजय दत्त भी नजर आने वाले हैं। दूसरी तरफ एक और जोड़ी है जिसकी फिल्म का भी बड़ा इंतजार है और वो हैं थालापति विजय, जिनके साथ में होंगे बॉबी देओल। 'इक्कीस' में धर्मेंद्र आखिरी बार नजर आएं। उनका बीते नवंबर निधन हो गया था। इसमें अमिताभ बच्चन के पोते अगस्त्य नंदा लीड रोल में है। साल के पहले ही दिन प्रदर्शित फिल्म की प्रचार सामग्री में धर्मेन्द्र की तस्वीर बड़ी प्रदर्शित की गई। यदि धर्मेंद्र जीवित होते तो उन्हें पोस्टर के किसी कोने में ही जगह मिलती।

'इक्कीस' में जयदीप अहलावत, सिकंद खेर और नसीरुद्दीन शाह के बेटे विवान शाह भी नजर आए। फिल्म को बनाया है श्रीराम राघवन ने जो किसी पहचान की मोहताज नहीं है। इससे पहले उनकी फिल्में अंधाधुन, बदलापुर, एजेंट विनोद, जॉनी गद्दार और 'एक हसीना' दर्शकों को आकर्षित कर चुकी है। देश भक्ति के मसाले और धर्मेंद्र की अंतिम फिल्म के रूप में प्रचारित 'इक्कीस' 26 के साल में उन्नीस ही रहने वाली है। क्योंकि, इसने अभी तक बॉक्स ऑफिस पर वह कमाल नहीं दिखाया, जिसकी अपेक्षा थी।

इस माह के दूसरे सप्ताह में बॉक्स ऑफिस पर थोड़ी गरमी बरसने की संभावना है। 9 जनवरी को साउथ के दो सुपरस्टार्स की भी फिल्में रिलीज हो रही हैं। पहला नाम तो प्रभास का है, जो 'बाहुबलि' और 'कल्कि' जैसी फिल्मों के नायक रहे हैं। अब 'राजा साब' बनकर सिनेमाघरों में आने वाले हैं। फिल्म 9 जनवरी को रिलीज हो रही है। इसमें प्रभास के साथ पूजा हेगड़े और संजय दत्त नजर आएंगे। हाल ही में प्रभास ने संजय दत्त की स्क्रीन प्रजेंस की तारीफ की है और 'धुरंधर' में उनका जलवा भी साफ देखने को मिला है। संजय दत्त और प्रभास के साथ फिल्म 'राजा साब' भी एक पैन इंडिया फिल्म है और इसे टकराना होगा साउथ के ही एक और सुपरस्टार थलापति विजय से। वही विजय जिनकी एक झलक पाने के लिए 41 लोगों ने अपनी जान दांव पर लगा दी थी। विजय के करियर की ये आखिरी फिल्म है। इसके बाद उनका राजनीति में पदार्पण होने वाला है। 9 जनवरी को ही विजय की फिल्म 'जन नायकन' रिलीज हो रही है। खास बात है कि इसमें बॉबी देओल भी अहम रोल में नजर आएंगे।

एक फिल्म की सफलता को निर्माता भुनवाने के लिए निर्माता अक्सर उसके सीक्वल को सफलता का फार्मूला मान बैठते है। 'बार्डर' की सफलता के बाद जेपी दत्ता इस साल 22 जनवरी को 'बॉर्डर-2' लेकर आ रहे है। गणतंत्र दिवस के साथ दूसरी छुट्टियों के साथ 'बार्डर 2' प्रदर्शित हो रही है। हसमें सनी देओल, दिलजीत दोसांज, वरुण धवन समेत कई बड़े एक्टर नजर आने वाले हैं। बीते दिनों सनी देओल की 'गदर 2' ने खूब कमाई की थी। कुछ ऐसी ही उम्मीद 'बॉर्डर 2' से भी की जा रही है। अनुराग सिंह के निर्देशन में बनी इस फिल्म की कहानी दर्शकों को वही जादू महसूस करा पाती है या नहीं!

इन फिल्मों के अलावा दर्शकां को इस साल जिन फिल्मों से उम्मीदें हैं उनमें सबसे आगे है तीन महीने बाद रिलीज होने वाली आदित्य धर निर्देशित 'धुरंधर 2' जिसका बेसब्री से इंतजार हो रहा है। यह 19 मार्च को बड़े पर्दे पर आएगी। रिपोर्ट्स के मुताबिक पहले और दूसरे पार्ट को मिलाकर मेकर्स ने करीब 400 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। लेकिन, फिल्म के पहले भाग ने ही दोनों फिल्मों की लागत निकाल कर निर्माता की झोली को लबालब कर दिया। इसके साथ ही साल के उत्तरार्ध में संजय लीला भंसाली 'लव एंड वॉर' आएगी। 'हीरा मंडी' की सफलता से उत्साहित संजय लीला भंसाली को 'लव एंड वॉर' से काफी उम्मीदें है। 200 करोड़ की लागत से बनी इस फिल्म में विक्की कौशल, रणबीर कपूर और आलिया भट्ट लीड रोल में हैं। फिल्म 14 अगस्त को सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

2026 में रिलीज हो रही सबसे बड़ी फिल्मों में एक नाम 'रामायण' का भी है। इसे लेकर पिछले कुछ सालों से चर्चा है। दो पार्ट में रिलीज हो रही फिल्म पर कथित तौर पर 4000 करोड़ रुपए बजट लगाया जा रहा है। पहला पार्ट 2026 की दीवाली पर रिलीज होगी और दूसरा पार्ट 2027 में आएगा। फिल्म में भगवान राम का किरदार रणबीर कपूर निभाते हुए दिखाई देंगे। लेकिन, जिस हिसाब से इसकी लागत बताई जा रही है, उसे देखते हुए यह स्वाभाविक ही है कि फिल्म चाहे बॉक्स ऑफिस पर कितनी ही धूम मचा ले, इसे इतनी भारी लागत निकालने के बाद मुनाफा निकालने के लिए बहुत कवायद करना पड़ेगी। अभी तक ऐसी कोई फिल्म शायद नहीं आई जिसने 4000 करोड से ज्यादा का बिजनेस किया हो।

हिंदी फिल्मों के दर्शकों को तीनों खान से यह उम्मीद रहती है, कि उनकी फिल्में भरपूर मनोरंजन करेगी। पिछले दिनों दर्शकों को सलमान खान और शाहरुख खान की बहुप्रतीक्षित फिल्मों की झलक देखने को भी मिली। 'किंग' के जरिए तीन साल बाद शाहरुख खान की वापसी होने जा रही है। वे सिद्धार्थ आनंद निर्देशित 'किंग' में अपनी बेटी के साथ नजर आएंगे। अभिषेक बच्चन इसमें लीड विलेन है। 350 करोड़ वाली इस फिल्म की रिलीज अभी घोषित नहीं हुई। 'बैटल ऑफ़ गलवान' भारत और चीन के बीच 2020 में हुए गलवान घाटी संघर्ष पर आधारित एक शक्तिशाली फ़िल्म है। अपूर्व लाखिया द्वारा निर्देशित इस फ़िल्म में चित्रांगदा सिंह महिला मुख्य भूमिका में नज़र आएंगी। इसे सलमान ख़ान फ़िल्म्स के बैनर तले प्रोड्यूस किया जा रहा है। फ़िल्म के फ़र्स्ट-लुक के सामने आते ही इसे लेकर उत्साह अपने चरम पर है।

एनिमल की भारी सफलता के बाद इस साल 'एनिमल पार्क' की रिलीज़ की जा रही है, जिसका दर्शकों को बेसब्री से इंतज़ार है। 'एनिमल' के पोस्ट-क्रेडिट सीन में दिखाई गई, कहानी को आगे बढ़ाते हुए, इसके अगले चैप्टर को लेकर उत्साह हाई है। इसमें और ज़्यादा गुस्सा, थ्रिल और इमोशन देखने को मिलेगा। यह साल की सबसे बड़ी रिलीज़ में से एक है। 'मिर्ज़ापुर : द फ़िल्म' देशभर में मिर्ज़ापुर सीरीज़ को मिली ज़बरदस्त लोकप्रियता के बाद अब यह बड़े परदे पर आने के लिए पूरी तरह तैयार है. यह उन गिनी-चुनी वेब सीरीज़ में से एक है, जिन्हें फ़ीचर फ़िल्म के रूप में रूपांतरित किया जा रहा है। मिर्ज़ापुर : द फ़िल्म में एक बार फिर कालेन भैया और गुड्डू पंडित जैसे आइकॉनिक किरदार नज़र आएंगे। लेकिन, इसके बावजूद यह यक्ष प्रश्न तो बना ही रहेगा कि क्या यह फिल्में फिल्मकारों की झोलियों को भर पाएंगी, जिसका जवाब इस साल के अंत में ही मिलेगा।

चिंदियों से बजाजखाना नहीं बनता !

प्रकाश पुरोहित

जब भी राहुल गांधी गंभीर मुद्दे पर बोलने खड़े होते हैं तो, औरों का नहीं पता, मेरा दिल धड़कने लगता है कि ना जाने कब पटरी से उतर जाएं। चूंकि, बहुत ज्ञान नहीं है तो कई बार खुद के ही जाल में उलझ जाते हैं और फिर उन्हें सिरा नहीं मिलता कि संकट से निकल सकें। इधर-उधर से जानकारी लेते हैं, लेकिन ठोस कुछ नहीं है, इसलिए यह आशंका हमेशा बनी रहती है कि ना जाने कब 'भैंस चली जाए पानी में।' जमीनी हकीकत और किताबें पढ़े बगैर पुख्ता ज्ञान नहीं मिलता है और इसलिए जो भी सामने नया आता है, दोहराने लगते हैं, जब तक कि कोई नया जुमला नहीं मिले।

जब 'ईश्वर के होने ना होने' पर चैनल पर बहस शुरू हुई तो बहुत कम लोग थे, जो मुफ्ती

शमाइल का नाम भी जानते होंगे, पहचान तो छोड़ ही दीजिए! जब बहस खत्म हुई तो यह चर्चित चेहरा और नाम हो गया। इसलिए नहीं कि ईश्वर के होने पर उन्होंने गले उतरने वाले अकाट्य तर्क दिए, बल्कि इसलिए कि सामने बहस करने के लिए फिल्मी लेखक जावेद अख्तर थे, जो आजकल, कहीं भी, लगभग हर हफ्ते नजर आ ही जाते हैं।

इधर-उधर के हिस्सों से फिल्में तो लिख लीं, लेकिन सलीम का साथ छूटा तो लेखन से भी गए और फिल्म निर्देशन का शौक रहा। निर्देशन का इंतजार आज भी है या गल गया, नहीं पता। तो अब क्या करें, बोलने की कला आती है कि संवाद लिखते रहे हैं, लेकिन जिस गंभीर किस्म के लेखन से वास्ता होना चाहिए, नहीं हो पाया। कुछ जुमले उन्होंने अच्छे से कंठस्थ कर लिए हैं कि पहली बार सुनने वाले को मजा आ जाता है, लेकिन पच्चीसवीं बार सुनने वाला मन कहीं और लगाने लगता है।

यह जरूर है कि कुछ नया, कुछ समय के लिए जोड़ना भी उन्हें आता है कि विदेशी फिल्मों के कैसेट देख कर पटकथा लिखने का बढ़िया अनुभव रहा है। एक ही किस्सा कई बार सुनाने वाले कभी विचारक नहीं हो सकते और यही खामी जावेद अख्तर को 'इस गम्भीर विषय' पर बोलने के काबिल नहीं मानती है।

मुफ्ती शमाइल नौजवान हैं और जानते थे कि जावेद अख्तर बातें कर सकते हैं, बहस नहीं कर सकेंगे। इसीलिए उन्होंने इस बहस के लिए रजामंदी दी या कह लें जावेद अख्तर को तैयार किया। मुफ्ती ने पढ़ा खूब है, लेकिन वही बात कि जस का तस बोल देने से बात नहीं बनती है। उनकी बात से किसी नास्तिक का मन डोल गया होगा, शक है। उनका यह मकसद भी नहीं था। उन्हें तो जावेद अख्तर के कंधे पर चढ़ कर खुद की पहचान बनानी थी और इस काम में कामयाब भी रहे। रही-सही कसर उनके साथ ताली बजाने लाई गई भीड़ ने पूरी कर दी, जो कई बार बात पूरी होने से पहले ही ताली बजाने लगती थी, जैसे संसद में मोदी के भाषण के दौरान बेबात मेज थपथपाहट सुनने के हम आदी हो चुके हैं!

जो राहुल गांधी के लिए महसूस होता रहता है, ठीक वैसा ही जावेद अख्तर को उस दिन देख कर लग रहा था कि इतनी बेचारगी उनके चेहरे और बर्ताव में कभी नजर नहीं आई। उस स्कूली छात्र की तरह लग रहे थे, जो होमवर्क के बगैर आ गया हो! जब अंग्रेजी के कुछ शब्दों (जैसे कांटिंजेंट) का मतलब ही उन्हें समझ नहीं आ रहा था और युवा मुफ्ती यूं मुस्करा रहे थे कि पता था फंसोगे जरूर। सिर्फ खबर बांच कर बहस नहीं की जा सकती। सामने वाले की बात का बेहतर तरीके से जवाब देना होता है। अपने निखरे-बदले व्यक्तित्व के दम पर बहस नहीं हो सकती, विचार चाहिए, कुछ नया नजर आना चाहिए। गजा के बच्चों की हत्या पर ऐसा कुछ नया नहीं था, जो जावेद अख्तर बता रहे थे।

यह तो साबित नहीं हो सका कि ईश्वर है या नहीं, लेकिन यह सिद्ध हो गया कि जावेद अख्तर को सामने बैठा कर मुफ्ती शमाइल ने खुद को स्टार बना लिया है। अब यह पूछने वाले कम ही मिलेंगे कि कौन मुफ्ती शमाइल! जावेद अख्तर का यह इलाका ही नहीं था। यदि शामिल होने से इनकार ही कर देते तो कम से कम किसी बेहतर जानकार (राम पुनियानी या जावेद के अपने अमेरिकी भाई सलमान अख्तर) के विचार तो जानने को मिलते। किसी और का मौका तो छीन ही लिया और जिस बात का विरोध कर रहे थे, वहां भी कमजोर साबित हुए। और तो और 'बहुमत का फैसला तो कभी भी बदल सकता है', यह कह कर फंस गए तो माफी भी मांग ली कि अपने शब्द वापस लेता हूं। खुदा को अल्लाह कह कर भी माफी मांगनी पड़ी!

मुफ्ती ने बाद के इंटरव्यू में मुस्कराते हुए कहा था 'जानता था कि जावेद साहब कोई नई बात तो नहीं कह सकेंगे और यही हुआ!' यह नूरा कुश्ती थी या प्रायोजित, नहीं पता, लेकिन जावेद अख्तर तो चारों खाने चित ही नजर आए हैं। निराशा उन चाहने वालों को भी हुई होगी, जो उन्हें कम जानते हैं और फिर भी इस उम्मीद से देखने-सुनने बैठे कि बोल तो लेते हैं!

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

हम 'जेन एक्स' पीढ़ी और हमारी दुनिया के रंग

इन दिनों बहुत जेन शब्द का बहुत प्रयोग हो रहा है। इसका मतलब आमतौर पर लोग या लोगों के समूह से निकाला जाता है। वास्तव में जेन अंग्रेजी के जनरेशन शब्द का छोटा रूप है।

(1) बेबी बोर्नर्स- 1946-1964 के बीच जन्मे लोग

(2) जनरेशन एक्स- 1964-1979 के बीच जन्मे लोग

(3) जनरेशन वाय- 1980-1994 के बीच जन्मे लोग। इन्हें मिलेनियल्स भी कहते हैं।

(4) जेन झेड- 1997-2009 के बीच जन्मे लोग। इन्हें डिजिटल नेटिव भी कहते हैं क्योंकि ये इंटरनेट के साथ बड़े हुए हैं।

(5) जेन अल्फा- 2010 के बाद पैदा पीढ़ी

अपनी बात करने के लिए मैंने 'जेन एक्स' सर्वप्रथम इसलिए चुना क्योंकि एक तो ये बेबी बूमर्स और मिलेनियल्स के बीच के जन्मे लोगों का समूह है। यह 1964-1979 के बीच का है पर इसे 1960-1980 के बीच का भी मान लेते हैं। मैं इस पीढ़ी में हुए मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक घटनाक्रम के बारे में बता सकती हूं क्योंकि मैं 'जेन एक्स' में आती हूं।

इस समय में बहुत व्यावहारिक, स्वतंत्र और तकनीकी बदलाव हुए थे इसलिये इसे खोई हुई पीढ़ी या लैच की पीढ़ी भी कहा जाता है। एक्स का मतलब अज्ञात भी है क्योंकि इन्हें परिभाषित करने का कोई स्पष्ट नाम नहीं था और वे बड़े सामाजिक बदलावों के बीच बड़े हुए थे। वे अक्सर स्कूल से अकेले लौटते थे और 'लैच की' (चाबी) अपने गले में लटकाये रहते थे। जहां तक मेरा अनुभव है कि हमारे भारत में माँ हमारा नाश्ता या खाना लिए इंतज़ार करती थी। उस समय रेडियो पे गाने चलते थे या समाचार, देवकीनंदन जी की आवाज़, अमीन सायानी की बिनाका गीत माला अब भी कानों में गूंजते हैं। हम रेलों में सफर करते थे और हवाई जहाज की आवाज़ सुनते ही क्लास रूम से मैदान में दौड़ जाते थे। हर राष्ट्रीय त्यौहार पर हम कड़क रिबन, सफेद पी.टी. शूज और तिरंगे झंडे के साथ जन-गन-मन गाते थे। कल्चरल इंम्पैक्ट में इसे एमटीवी जेनेरेशन के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि 80 के करीब किशोरों का संगीत, टेपरिकार्ड, कैसेट पे आश्रित था।

2026 तक ये उम्र 44 वर्ष से 60

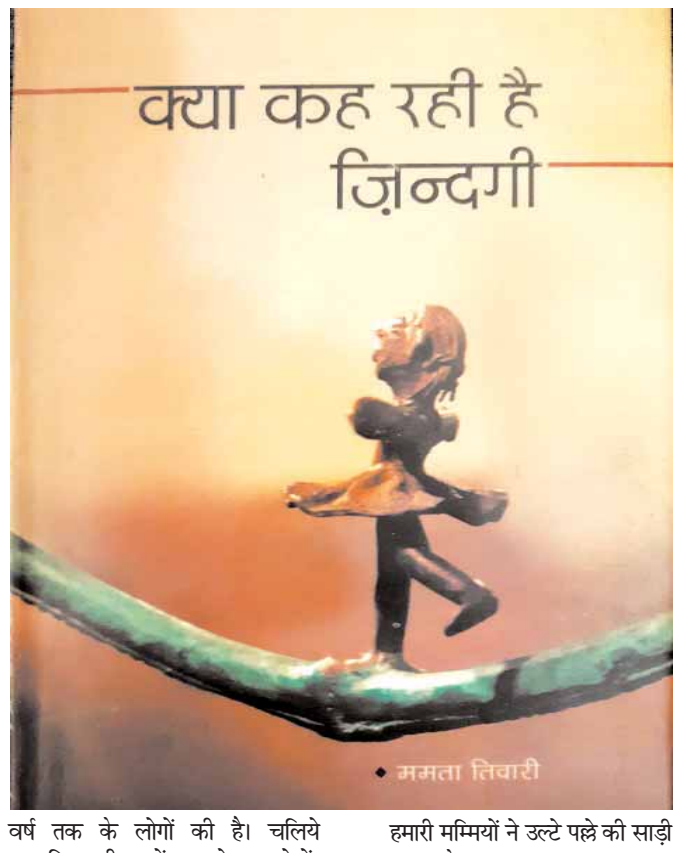

वर्ष तक के लोगों की है। चलिये सामाजिक जीवन में क्या होता था देखें। हमारे माँ हिंदी मीडियम की पढ़ी होती थी। कुछ स्कूली शिक्षा के बाद शादी की देहरी चढ़ जाती थी। कॉलेज में पढ़ते ही लड़कों की शादी हो जाती थी पर ऐसा नहीं है कि वो आगे नहीं बढ़ पाते थे। वे विदेश भी जाते थे और बड़े बड़े ओहदों पे होते थे। हमारे समय के काफी प्रशासकीय अधिकारी पोस्टिंग पर पत्नी को साथ नहीं ले जाते थे। माँ-बाप के पास छोड़ देते थे। बच्चे बाद में पढ़ने शहर आ जाते थे पिता के पास। तब पुरूषों को ऊँचे ओहदे पे बैठे अपनी पत्नियाँ पिछड़ी लगती और वो बाहर विवाहेत्तर संबंध बनाते थे (हर कोई ऐसा नहीं होता)। बच्चे ज़्यादातर मेडिकल, इंजीनियरिंग, पी.एस.सी., आई.ए.एस., आर्मी ज्वाइन करते थे जो चयनित नहीं होते थे वो पी.जी. करके प्रोफेसर (जो बाद में पी.एच.डी. होते थे)। डायरेक्ट मार्कशीट से चुनाव होता था। आज की तरह लॉ और आर्ट्स की कोई च्वाइस वैल्यू नहीं थी। जिन्हें कहीं एडमिशन नहीं मिलता था वो दिन में आर्ट्स और लॉ की नाइट क्लासेस ज्वाइन करते थे। शादी माता-पिता द्वारा ही तय की जाती थी। इंटरकास्ट तो होने ही नहीं देते थे और लव मैरिज भी 'हाय राम' और कौतुक का विषय होती थी।

हमारी मम्मियों ने उल्टे पल्ले की साड़ी पहन पापा के साथ क्लब जाना शुरू कर दिया था। हार्ड ड्रिंक्स खुल कर पीते कोई महिला नहीं दिखती थी वेस्टर्न कपड़े भी नहीं ही पहनती थी। लड़कियों ने स्कर्ट, स्लैक्स और फिल्में देख बालों में स्कार्फ बांधना, धूप के चश्मे पहनना, साइकिल पे कॉलेज जाना (जो रईस थी वो लूना स्कूटर से आती थी) पिता की सरकारी गाड़ियों से भी लड़कियाँ आती थी। मोटर साइकिल बहुत कम लड़कों के पास होती थी। तब दूध वाले मोटर साइकिल से दूध बांटते थे। किसानों के पास मोटर साइकिल होती थी। स्कूटर में वेस्पा, लेम्ब्रेटा और कारों में स्टैंटर्ड और फियेट होती थी। सरकारी गाड़ियों में एम्बेसेडर मिला करती थी। पुरुष घर के बड़ों, बच्चों से कभी-कभी बीवी से भी छुपकर हार्ड ड्रिंक लेते थे। बच्चे ड्रिंक, सिगरेट नहीं लेते थे।

बहुधा कॉलेज हॉस्टेल वाले लड़के ही सिगरेट, ड्रिंक लेते थे। घर आकर शरीफ बन जाते थे। प्रेम पत्रों का आदान प्रदान होता था। 90 प्रतिशत प्रसंग शादी से पहले दम तोड़ देते थे। 1 प्रतिशत ही आत्महत्या करते थे। पिता से पिटने के बाद भी कोई बच्चा अवसाद में नहीं आता था। हमारे समय 4-5 बच्चे परिवार में होते थे तो माँ बाप बड़े बच्चों के भरोसे बाकी को छोड़ देते थे और सेकंड शो मूवी देखने जाते थे। हमें बचपन में देशभक्ति की मूवी देखने को मिलती थी। पूरा परिवार स्टूडियो जाकर फैमिली फोटो खिंचवाता था। तब 60 या 70 प्रतिशत अंक आना बहुत गर्व का विषय होता था। मुझे याद है एम.एस.सी. में मेरा मात्र 67 प्रतिशत अंक आए थे। तब भी मैंने यूनिवर्सिटी में तीसरी पोजीशन पाई थी। लड़कियों के पी.जी. होते ही माता पिता शादी के लिये व्याकुल हो जाते थे। डिग्री ज़्यादातर लड़कियों के लिए शादी के बाज़ार में एक योग्यता होती थी। लड़कियों के जॉब पे आपत्ति नहीं थी पर शादी प्राथमिकता थी। कई बार ससुराल वाले जॉब छुड़वा देते थे या 'हमारे घर में बहुत है नौकरी की क्या ज़रूरत' कहा जाता था। बहुधा पुरूष बाहर नौकरी करते थे। बहुएं ससुराल वालों के साथ रहती थी। वहीं बच्चे पलते थे। खैर, सामाजिक स्थिति तो बहुत विस्तृत हैं।

अब राजनीतिक स्थिति की बाद करें सो जेन एक्स बच्चे उतनी राजनीतिक रूचि नहीं रखते थे जितने दादी-बाबा, माता-पिता। हाँ, पी.एस.सी. की तैयारी वाले युवा राजनीति की जानकारी पढ़ते थे। कोचिंग नहीं ही होती थी 'कॉम्पटीशिन सक्सेस' तैयारी के लिये पढ़ी जाती थी और हाँ 'मनोरमा ईयर बुक' भी। स्थापित नेताओं की पीढ़ी और थोड़े उम्रदराज़ लोग राजनीति में दख़ल देते थे। लैपटॉप, साइकिल बांटने का कोई प्रावधान नहीं था। लोग नेताओं के भाषण से प्रभावित होते थे। तब भीड़ इकट्ठी नहीं करनी पड़ती थी। अटल जी, इंदिरा जी जैसे लोगों के भाषण सुनने को लोग घंटों धूप में खड़े होते थे। आज की तरह बसों से लोगों को भोजन और इनाम का लालच नहीं दिया जाता था।

आर्थिक स्थिति बुरी नहीं होती थी। हमारे बचपन में हमारे सिविल जज पिता छोटे शहर में साइकिल से कोर्ट जाते थे और तनख्वाह में 250 रूपये पाते थे। हमारे घर गांव से रिश्तेदार महीनों भर के लिए नौकरी के लिये आते थे। दान धर्म भी होता था। शादियाँ भी, बचत भी उसी राशि में हो जाती थी। स्त्री घर में पुरूष की सत्ता स्वीकार कर लेती थी। आज 60 वर्ष में जेन एक्स वाली पीढ़ी, माता पिता का ख्याल भी रख रही है। वृद्धाश्रम भेज रही है। केयर टेकर भी रख रही है। लोन लेकर बच्चों को विदेश में पढ़ा रही है और 60 वें वर्ष में अकेले पति- पत्नी एक दूसरे से पूछते हैं रोज़, और क्या कह रही है ज़िंदगी।

उजास

फोटो : जगदीश कौशल

आने वाले कल के लिए आज सार्थक पल !

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

दो साल पहले फिल्म आई थी- वूमन टाकिंग। फिल्म अमेरिका की ऐसी सोसाइटी की कहानी है, जहां कॉलोनी में महिलाओं को नशा देकर कई बार बलात्कार होता है। जब जागती हैं तो उन्हें कहा जाता है कि यह सब उनके दिमाग की खुराफात है, उन्हें शैतान का डर और जहन्नुम का खौफ दिखाकर चुप करा दिया जाता है। ऐसी लड़की-महिला नहीं है, जो इस जुल्म से न गुजरी हो, लेकिन फिर एक लड़की उस बलात्कारी को देख लेती है, हल्ला मचाती है। उस कॉलोनी के सभी मर्दों को शहर भेज दिया जाता है ताकि उन्हें कोई नुकसान न पहुंचे। अब यह फैसला महिलाओं के हाथों में है कि या तो मर्दों को लौटने दें और जैसा चल रहा था वैसा चलने दें या जब मर्द लौटें तो उनसे हक की लड़ाई करें या इस जगह को छोड़ कर कहीं और चली जाएं।

रेपिस्ट कुलदीप सेंगर की लड़की टीवी पर रोते जब कहती है कि 'मेरे पिता की कोई गलती नहीं है' तो उस पर गुस्सा नहीं आता है। सिर्फ इसलिए उस इंसान का बचाव कर रही है, क्योंकि पिता है। निर्भया के बलात्कारियों में से एक की पत्नी अपराधी मानने से इंकार कर देती है। इस सबके पीछे वही मानसिकता है, जो महिलाओं को खुद की सोच-नजर नहीं देती है। भाव है कि मेरा पति-पिता गलत नहीं है। जब मीटू मूवमेंट चरम पर था, तब भी कुछ महिलाएं कहने से नहीं चूकीं कि हमने तो ऐसा कुछ नहीं देखा, न बर्दाश्त किया और ऐसे समय उन महिलाओं की ही गलती ढूंढी गई।

दो साल पहले फिल्म आई थी- वूमन टाकिंग। फिल्म अमेरिका की ऐसी सोसाइटी की कहानी है, जहां कॉलोनी में महिलाओं को नशा देकर कई बार बलात्कार होता है। जब जागती हैं तो उन्हें कहा जाता है कि यह सब उनके दिमाग की खुराफात है, उन्हें शैतान का डर और जहन्नुम का खौफ दिखाकर चुप करा दिया जाता है। ऐसी लड़की-महिला नहीं है, जो इस जुल्म से न गुजरी हो, लेकिन फिर एक लड़की उस बलात्कारी को देख लेती है, हल्ला मचाती है। उस कॉलोनी के सभी मर्दों को शहर भेज दिया जाता है ताकि उन्हें कोई नुकसान न पहुंचे। अब यह फैसला महिलाओं के हाथों में है कि या तो मर्दों को लौटने दें और जैसा चल रहा था वैसा चलने दें या जब मर्द लौटें तो उनसे हक की लड़ाई करें या इस जगह को छोड़ कर कहीं और चली जाएं। फिल्म पूरी तरह महिलाओं की सोच, डर, अनुभव और फैसलों को इतने नजदीक से

महसूस कराती है कि देखते हुए गुस्सा और दुःख होता है। चार साल की बच्ची से दादी की उम्र तक की महिलाएं दुःख और तकलीफ जमा कर फैसला लेती हैं। यह फिल्म इसी नाम की किताब पर बनी है, लेकिन किताब बोलीविया में लिखी है। बोलीविया की कम्युनिटी (2005 से 2009) में करीब डेढ़ सौ महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया और जब यह खबर बाहर आई, उसके बाद कोर्ट में केस चला और आठ लोगों को पच्चीस बरस की सजा सुनाई। यहां बात नहीं है, बात यह है कि खुद से ऊपर उठकर सही और गलत कहने, उस पर बात करने और फिर फैसला लेने से ही बनती है, बदलाव आता है, सुधार होता है।

फिल्म में ऐसी भी महिलाएं हैं, जो पुरुषों के खिलाफ नहीं बोलतीं, लेकिन मौका आता है तो विरोध दर्ज करती हैं। पूरी फिल्म में संवाद पर जोर है। कई हैं जो पुरुषों को सजा देने से इसलिए डरती हैं, क्योंकि उन्हें स्वर्ग नहीं मिलेगा। क्या आज को सुधारना जरूरी नहीं है? जिस कल को कोई नहीं जानता, उसकी चिंता में आज को बर्बाद कर देना कहां की समझदारी है।

सवाल पूछे जाने चाहिए कि आखिर नई उम्र के लड़के किस वजह से ऐसी सोच रखते हैं। कुलदीप सेंगर तो फिर भी उम्र पा चुका है, लेकिन क्या उसकी लड़की अपने से कम उम्र के लड़कों को चुपचाप साथ नहीं दे रही है कि जाओ जो मन आए करो, क्योंकि तुम्हारी बच्ची हक में खड़ी होगी? नया साल है, कोशिश करें सच कह सकें, उसका साथ दे सकें और ऐसी कहानियों को पढ़ें, जो हिम्मत दें। ऐसी फिल्में देखें जो उम्मीद दें कि अगर महिलाएं ऐसा कर पाईं तो हम भी कर लेंगे।